सिन्धु घाटी सभ्यता

भारत की अतीत की सबसे पहली तस्वीर उस सिन्धु घाटी सभ्यता में मिलती है जिसके अवशेष सिन्ध में मोहनजोदड़ो एवं पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में हडप्पा में मिले है। इन खुदाईयों नें प्राचीन इतिहास की समझ में क्रांति ला दी।

सिन्धु घाटी सभ्यता

सिन्धु
सिन्धु एवं उसकी सहायक नदियों (रावी, घग्घर, सतलज) का क्षेत्र

घाटी
वह समतल क्षेत्र जहां निवास की आदर्श विद्यमान हो
उदा. कश्मीर घाटी

सभ्यता
वह मूर्त संकल्पना जिसके आधार पर मानवीय आवश्यकताऐं पूर्ण होती है।

- 1826 में चार्ल्स मेसन ने हडप्पा की ओर ध्यान आर्कषित करवाया
- 1853 में करांची से लाहौर के मध्य रेल्वे लाईन के निर्माण के समय ब्रेटन बन्धु ने यहां से ईंट इकत्रित की।
- 1921 में जॉन मार्शल, भारतीय पुरातत्व एवं सर्वेक्षण विभाग के अध्यक्ष नियुक्त किये गये। इन्हीं के नेतृत्व में उत्खनन कार्य प्रारम्भ हुआ।
- कुल क्षेत्रफल : 20 लाख वर्ग किमी.
- वर्तमान क्षेत्रफल : 13 लाख वर्ग किमी.

  - पश्चिम से पूर्व क्षेत्रफल – 1600km
  - उत्तर से दक्षिण क्षेत्रफल – 1400km
  - जलीय सीमा – 1300km

सिन्धु घाटी सभ्यता

- कालक्रम 2350 – 1750 ई.पू.(कार्बन डेटिंग)
- महत्वपूर्ण स्थल – स्वतंत्रता पश्चात् लगभग 1500 स्थलों की खोज की।
- 7 स्थलों को नगर की संज्ञा दी गई।
  1. हडप्पा
  2. मोहनजोदड़ो
  3. लोथल
  4. धोलावीरा
  5. कालीबंगा
  6. चन्हदुड़ो
  7. बनबाली

हडप्पा

- निर्देशक – जॉन मार्शल
- खुदाई कर्ता – दयाराम साहनी – 1921 में
- सहायक – माधो स्वरूप वत्स
- स्थिति : पाकिस्तान के पंजाब प्रांत मांटगोमरी जिला।
- नदी : रावी नदी के बांयें तट पर।
- विशेषताऐं :

पश्चिमी टीला	पूर्वी टीला

- नगर को 2 भागों में बांटा – 1. पश्चिमी टीला 2. पूर्वी टीला

<u>पश्चिमी टीला</u> : 1. दुर्ग टीला – व्यापारी एवं पुरोहित लोगों का निवास स्थान।
2. अपेक्षाकृत अधिक उंचाई पर, बाढ एवं बाहरी आक्रमण से सुरक्षित
3. चाहरदीवारी एवं परकोटा से घिरा
4. अंदर कच्ची ईटे
5. बाहर पक्की ईटें

<u>पूर्वी टीला</u>
1. नगर क्षेत्र की संज्ञा
2. किसान व मजदूर रहते थे।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

प्राप्त स्थल एवं सामाग्री

- F टीला में 6–6 की पंक्तियों में दो अन्नागार मिले।
- F टीला में ही 15 श्रमिक आवास तथा 18 वृत्ताकार चबुतरे मिले है।
- गेंहू व जौ के साक्ष्य मिले।
- पश्चिमी टीले के दक्षिण में R-37 नामक कब्र मिली जो कि लकडी की बनी हुई थी।
- तांबे की इक्कागाड़ी (पूर्वी टीला)।
- सर्वाधिक अभिलेखीय मोहरें।
- सूतो कपडे के साक्ष्य।
- मणमूर्ति – स्त्री के गर्भ से वृक्ष की उत्पत्ति वाली आकृति।
- विशेष : सिंधु घाटी सभ्यता के उत्खनन में खोजा गया प्रमुख स्थल जिसके कारण इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है।

मोहनजोदड़ो

- पाकिस्तान के सिन्ध प्रांत में लरकाना जिला में सिंधु नदी के दायें तट पर है।
- उत्खनन कर्ता – 1922 में राखलदास बेनर्जी
- जॉन मार्शल के अनुसार यहां 7 बार बाढ़ आई एवं पुनः नवीनीकरण।
- K.U.R केनेडी :– मलेरिया के प्रकोप से पतन
- सर्वाधिक जनसंख्या – 35 से 40 हजार (भूमध्यसागरीय प्रजाति)
- उपनाम : मृतकों का टीला/नगर, स्तूप टीला, सिंधु का बाग

प्राप्त सामाग्री एवं स्थल

- पश्चिमी टीला से बहुत बड़ा सभा भवन मिला है।
- पुरोहितों के रहने के लिये पुरोहित आवास मिला है। विशिष्ट वर्गों के पड़ने हेतु महाविद्यालय के साक्ष्य।
- घर दो से तीन मंजिल जिसमें कुंआ, स्नानागार, सीढिया आदि दरवाजे गली में खुलते थे।
- अन्नागार एवं वृहत स्नानागार (धार्मिक अनुष्ठान–सुर्य उपासना) के साक्ष्य स्नानागार में उत्तर से दक्षिण की ओर सीढ़िया ।
- वृहत स्नाानागार को जॉन मॉर्शल ने ''तात्कालीन विश्व का आश्चर्य'' कहा।
- अन्नागार सबसे बड़ी ईमारती संरचना।
- वृहत स्नानागार – जिसके मध्य स्नानाकुंड 11.88 मीटर लम्बा, 7.01 मीटर चौडा एवं 2.43 मीटर गहरा है।

पूर्वी टीला :

- 10 इंच की कांसे की मूर्ति (नर्तकी की मूर्ति) : अधिकतर आबादी भूमध्यसागरीय थी किन्तु नर्तकी की मूर्ति प्रोटोऑस्ट्रेलाइड प्रजाति की थी।
- सर्वाधिक संख्या में मोहरे (1200 मोहरें), वर्गाकार, सेलखड़ी से निर्मित।
- 10 मीटर चौड़ी सड़क जिसे राजपथ कहा गया।
- पशुपतिनाथ की मूर्ति।
- कढ़ाई दार साल ओढ़े हुये – योगि की मूर्ति
- वृषभ मूर्ति – एक सींग वाला बैल
- बेलनाकार मुहरें – मेसोपोटामिया सभ्यता।
- स्टूमर्ट पिग्गट : हडप्पा एवं मोहनजोदड़ो जुड़वा राजधानी कहा।

लोथल

- गुजरात राज्य के अमहदाबाद जिले में भोगवा नदी के तट पर स्थित
- उत्खनन कर्ता : रंगनाथ रॉव (1954 में)
- विशेषताऐं
  - 20 समाधियां प्राप्त हुई जिनमें 3 युगल समाधियां।
  - दोनो नगर एक ही रक्षा प्राचीर से घिरे हुये।
  - मिस्त्र का ममी का मॉडल प्राप्त हुआ।
  - गोरिल्ला एवं बारहसिंहा की मौहरें प्राप्त हुई।
  - 2 मूंह वाली राक्षस की मुद्रा प्राप्त (फारस मौहर)।
  - नॉव की चित्र वाली मौहर प्राप्त।
  - बन्दरगाह के साक्ष्य मिले।
  - हाथी दांत का पैमाना।
  - घोड़े के अस्थि–पंजर मिले।
  - धान एवं बाजरा के साक्ष्य।
- प्राप्त स्थलः
  - अग्निकुण्ड, रंगाईकुण्ड, मनके बनाने का कारखाना, आटा पीसने की चक्की।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

चन्हूदड़ो

- पाकिस्तान के सिंध प्रांत में सिन्धु नदी के तट पर स्थित
- खोजकर्ता : 1931 में एम.जी.मजूमदार तथा 1535 में अर्नेस्ट मैके
- विशेषताऐं :
  - हड़प्पा सभ्यता के पूर्वकालीन, समकालीन व पाश्चत् सभ्यता के साक्ष्य।
  - झूकर–झांगर संस्कृति
  - पश्चिमी व पूर्वी दोनों नगरों में कोई भी दुर्गीकृत नहीं
  - वक्राकार ईंट पर बिल्ली का कुत्ते के द्वारा पीछा करते हुये पद्चिन्ह
  - मनके बनाना का कारखाना।
  - सौन्दर्य प्रसाधान : लिपिस्टक, काजल लगाने के सुई प्राप्त।

कालीबंगा

- राजस्थान के गंगा नगर जिले में घग्घर नदी के तट पर स्थित।
- खोजकर्ताः 1957 में अमलानंद घोष, 1960 बी.के. थापक
- शाब्दिक अर्थ : काले रंग की चूड़िया
- विशेषताऐं :
- पश्चिमी व पूर्वी दोनों नगर अलग अलग रक्षा प्राचीर से सुरक्षित
- जुते हुये खेत के साक्ष्य
- ऊंट के अस्थि–पंजर के साक्ष्य
- मिट्टी की पट्टिका पर सींग युक्त देवता के साक्ष्य, दूसरी तरफ मनुष्य एवं बकरी की छाप।
- अलंकृत ईंट के साक्ष्य
- 7 अग्निकुण्ड के साक्ष्य
- बच्चे की खोपड़ी प्राप्त हुई जिसमें छेद है। अर्थात् शल्य चिकित्सा का अनुमान
- सूती कपड़े में लपेटा हुआ चाकू प्राप्त हुआ।
- जॉर्ज डेल्स के अनुसार भूकम्प से पतन।

धौलावीरा

- गुजरात के भचाउ जिले में उपस्थित(कच्छ की खाडी)
- खोजकर्ता : जगपति जोशी (1667)

- सिन्धु घाटी सभ्यता का एकमात्र स्थल जो तीन भागों में विभक्त है।
- पश्चिमी टीला एवं मध्यमा के मध्य स्टेडियम के साक्ष्य
- शैलकृत जलकुण्ड (जल प्रबंधन हेतु) के साक्ष्य
- 10 अक्षरों का नेम प्लेट प्राप्त हुआ।
- 16 बड़े तालाब एवं 2 नहरों का प्रमाण।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

बनवाली

- हरियाणा के हिसार जिलें में घग्घर नदी के तट पर
- खोजकर्ता : आर.एस.विष्ट
- विशेषताऐं :
  - मिट्टी से बनी हल की आकृति
  - अच्छे किस्म के जौ के साक्ष्य
  - अग्निकुण्ड के साक्ष्य

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

❖ सिंधु घाटी सभ्यता नगर नियोजन पर टिप्पड़ी

- सिंधु घाटी सभ्यता (2350 ई.पू. – 1750 ई.पू.)
- नगर नियोजन की जानकारी – पुरातात्विक अवशेषों

1) नगर दो भागों में विभक्त थे।

1. पश्चिमी टीला
- अपेक्षाकृत ऊंचे स्थान
- दुर्गीकृत – बाढ़ से सुरक्षित
- पुरोहित, व्यापारी शासक वर्ग निवास स्थान

2. पूर्वी टीला (नगर क्षेत्र)

अपेक्षाकृत नीचा स्थान
दुर्गीकृत नहीं
सामान्य नागरिक, शिल्पकार
कारीगर, श्रमिक इत्यादि

- <u>अपवाद</u> : कालीबंगा दोनों क्षेत्र दुर्गीकृत।

  लोथल दोनों क्षेत्र एक ही रक्षा प्राचीर से दुर्गीकृत

  धोलावीरा नगर 3 भागों में विभक्त।

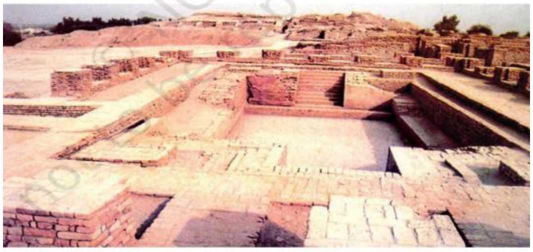

मोहनजोदड़ो का महान स्नानागार

2) अधिकतर नगर आयताकार संरचना।

- नगरों की सड़क एक–दूसरे को लम्बवत् काटती है।
- ग्रिडनुमा संरचना
- <u>साक्ष्य</u> :

  हड़प्पा से 6–6 पंक्ति के विशाल अन्नागार

  मोहनजोदड़ो से विशाल अन्नागार एवं स्नानागार (11.88 मी. लंबा, 7.01 चौड़ा व 2.43 मी. गहरा)

  मोहनजोदड़ो से 10 मी. चौड़ा सड़क = राजपथ प्राप्त

  घरों के दरवाजे मुख्य सड़क पर न खुलकर गलियों में खुलते थे। अपवाद : लोथल

<u>जलनिकासी</u>

पक्की एवं ढकी हुई नलियां।
सड़को के किनारे नलियां निर्माण जो ऊपर से ढकी थी।
घरों का गंदा पानी इन्हीं नलियों से होकर मुख्य नाली में गिरता था।

- घर निर्माण :

  दो मंजिल भवन आकृति

  निर्माण – पक्की ईंटों का प्रयोग

  घरों में आंगन, स्नानाघार, कुऐं, रसोईघर विद्यमान

प्रश्न : सिन्धु घाटी सभ्यता सामाजिक जीवन पर प्रकाश डालिये ?

- सिंधु घाटी सभ्यता (2350 ई.पू. – 1750 ई.पू.)
- सिंधु घाटी सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता थी – 1921 में जॉन मॉर्शल के नेतृत्व में हुऐ उत्खनन के पश्चात् यह सभ्यता अस्तित्व में आई।

सामाजिक जीवन

- समाज
- स्त्रियों की दशा
- खान पान
- वेशभूषा
- रीति–रिवाज
- मनोरंजन के साधन

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

समाज

पश्चिमी टीला	पूर्वी टीला
↓	↓
दुर्ग	नगर क्षेत्र

समाज : दो वर्गों में विभक्त
विशिष्ट वर्ग : पुरोहित, शासक, व्यापारी
सामान्य वर्ग : शिल्पकार, श्रमिक, दास
निवास स्थान में वर्ग विभिन्नता, विशिष्ट वर्ग – पश्चिमी दुर्ग – अपेक्षाकृत ऊंचा, दुर्गीकृत बाढ़ से सुरक्षित, सामान्य वर्ग – पूर्वी टीला (नगर क्षेत्र)

- 4 प्रजाति के निवासी विद्यमान
  1. अलपाइन,
  2. भूमध्यसागरीय
  3. प्रोटो–ऑस्ट्रेलॉइड
  4. मंगोलाइड
- सर्वाधिक संख्या : भूमध्य सागरीय (मेडी टेरियन)

स्त्री दशा

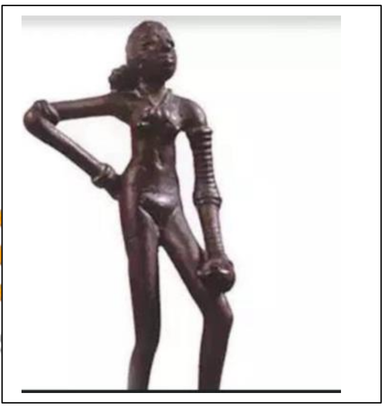

- मातृसत्तामक समाज क्योकि सर्वाधिक महिलाओं की मूर्ति
- स्त्री का उवरता देवी (शक्ति) के रूप में निरूपित किया गया है।
- साक्ष्य : मोहनजोदड़ो से कांसे की नतृकी की मूर्ति
- हड्प्पा से उर्वरता देवी की मृणमूर्ति प्राप्त (स्त्री गर्भ से वृक्ष की उत्पत्ति)
- नकरात्मक पक्ष : सती प्रथा के अनुमान
- साक्ष्य : लोथल एवं कालीबंगा से युगल शवाधान प्राप्त

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

खान–पान

- शाकाहारी एवं मांसहारी
- साक्ष्य : हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से विशाल अन्नागार (गेहूं साक्ष्य), लोथल से धान एवं बनवाली से जौ के साक्ष्य।
- सनौली से जानवरों की हड्डियां
- मोहरों पर मछली की सर्वाधिक आकृति : मछली सेवन का अनुमान

रीति–रिवाज

- प्रकृति, पूजा, धार्मिक अनुष्ठान, सूर्य पूजा, वृषभपूजा।
- साक्ष्य : कालीबंगा से यज्ञ कुण्ड, अनुष्ठान हेतु।
- मोहनजोदड़ो से सार्वजनिक स्नानागार
- सूर्य उपासना हेतु सामूहिक स्थान : सूर्य जल अभिषेक

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

अंतेष्टि – तीन तरीके से प्रचलित

1. पूर्ण शवाधान – पूरे शरीर को जमीन के अंदर दफन कर देना
2. आंशिक शवधान – शरीर के कुछ भागों को नष्ठ होने के बाद दफनाना
3. कलश शवधान – शव को जलाकर राख को कलश में रखकर दफनाना

- युग्म शवाधान के साक्ष्य भी लोथल एवं कालीबंगा से

वेश–भूषा

- सूती एवं ऊनी वस्त्र का प्रयोग
- साक्ष्य : हड़प्पा से सूती कपड़ा
- मोहनजोदड़ो से तीन पटितयां कढाईदार ऊनी शॉल ओड़े योगी की मूर्ति प्राप्त

आभूषण

- सौंदर्य प्रिय प्रजाति
- वर्ग असमानता विद्यमान
- गरीब वर्ग – मिट्टी गोमदे, सीप, सख से निर्मित आभूषण पहनते थे
- अमोर वर्ग – सोने, चांदी, मणी, से निर्मित आभूषण पहनते थे।
- साक्ष्य : हड़प्पा से श्रृंगार दान
- चन्हदड़ो से लिपिस्टक एवं सौंदर्य प्रसाधन सामाग्री प्राप्त (जैसे कंघी, काजल ..)
- मनके बनाने के कारखाने।

मनारंजन

- शिकार करना
- मछली करना
- पशु–पक्षी लड़ाना
- चौपड़ पाशा खेलना

शिक्षा

- हड़प्पावासी, गणित, गृह नक्षत्र, माप–तौल प्रणाली, धातु निर्माण में जानकारी रखते थे।

निष्कर्ष : सिन्धु घाटी सभ्यता विश्व की पहली विकसित सभ्यता थी जो अपनी पाश्चातवर्ती सभ्यता – ऋगवेदिक, उत्तरवेदिक सभ्यता से विकसित थी एवं समकालीन सभ्यता मेसापोटामियां मिस्त्र में अग्रणी थी।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

Que. सिंधु घाटी सभ्यता का आर्थिक जीवन

Ans. सिंधु घाटी सभ्यता : विश्व की सबसे प्राचीनतम सभ्यता है। जिसका कालक्रम – 2350 ई.पू. से 1750 ई.पू. तक था।

आर्थिक जीवन

कृषि | पशुपालन | शिल्प व उद्योग | व्यापार–वाणिज्य | मुहरें (विनिमय साधन)

कृषि

- सिंधु एवं सहायक नदियों–घग्घर, रावी, चिनाव, सतलुज द्वारा निर्मित उपजाउ जलोढ़ मृदा – कृषि का अधिशेष उत्पादन।
- साक्ष्य : हडप्पा एवं मोहनजोदड़ो से प्राप्त विशाल अन्नागार
- फसलें : मुख्यतः रबी की फसल की खेती।
  9 फसलों के साक्ष्य – गेहूं, जौ, धान, सारसों।
  विश्व में प्रथम बार कपास का उत्पादन।
- साक्ष्य : लोथल से चावल के साक्ष्य।
  बनवाली से अच्छी किस्म के जौ के साक्ष्य।
  हड़प्पा से सूतो कपड़े का साक्ष्य।

पशुपालन

पशु का महत्व

कृषि हेतु जुताई साधन | परिवहन | भोजन के रूप में

- प्रमुख पशु : बैल, भैंस, बकरी, ऊँट, हाथी।
- प्रिय पशु : एक श्रृंगी बैल (वृषभ)
- साक्ष्य : कालीबंगा से ऊँट की हड्डिया
  लोथल से घोड़े के अवशेष
  पशुपतिनाथ मुहर पर 5 जानवरों का चित्र अंकन
  वृषभ मुद्रा

शिल्प व उद्योग धंधे

1. कपडा उद्योग : सूती एवं ऊनी वस्त्र उत्पादन।
   साक्ष्य : हड़प्पा से सूती कपड़े के साक्ष्य।
   मोहनजोदड़ो से कढ़ाईदार सॉल।
   ओढ़े योगी की मूर्ति प्राप्त
2. मृद माण्ड उद्योग : मिट्टी एवं कांस्य निर्मित बर्तनों में लाल रंग का प्रयोग एवं काले रंग की पुष्पाकृति।
3. मनका उद्योग : मिट्टी, गोमेद, लाल पत्थर सोने से निर्मित
   साक्ष्य : लोथल, चन्हूदड़ो से मनके बनाने के कारखाने।

व्यापार–वाणिज्य

- यह 2 प्रकार से होता है
  1. आंतरिक व्यापारः कश्मीर, कोलार, खेतड़ी, ब्लूचिस्तान।
  2. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारः मेसोपोटामिया मिस्त्र, फारस की खाड़ी।

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

- साक्ष्य : 1. मेसोपोटामिया के नगरों – उर, उसर, हमा से हड़प्पाकालीन वर्गाकार मुहरें प्राप्त। उसी प्रकार मोहनजोदड़ो से मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहरें प्राप्त।
  2. मिस्त्र का प्रसिद्ध ममी मॉडल लोथल से प्राप्त।
  3. फारस शासक 'सारगौन' के अभिलेख में हड़प्पा से व्यापार का वर्णन–मेलुआ शब्द का प्रयोग
- आयातित वस्तुऐं :
  बहुमूल्य पत्थर – कश्मीर
  सोना – कोलार
  तांबा – खेतड़ी
  चांदी, (फिरोजा) – ईरान, अफगानिस्तान
- निर्यातिति वस्तुऐं : सीप, हाथीदांत, वस्त्र, मनके।
- प्रमुख बन्दर गाह : लोथल, सुरकोटदा
- माप–तौल : दशमलव पद्धिति –16 के गुणज में जैसे 16, 32, 48 ....
- पैमाना

विनिमय

- मुहरों के रूप में
- 2500 मुहरें – शैलखड़ी से निर्मित
- सर्वाधिक मोहनजोदड़ो से प्राप्त
- संरचना – वर्गाकार, आयताकार
- आकृति – यू आकार, 64 मूल चिन्ह, मछली का चित्र अंकन

निष्कर्ष : सिंधु घाटी सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता थी जिसने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार स्थापित किया एवं व्यापार अधिशेष भारत के पक्ष में आर्थिक दृष्टि से भारत विश्व का नेतृत्वकर्ता

Que. सिंधु घाटी सभ्यता का राजनैतिक जीवन

Ans. राजनैतिक संगठन का कोई स्पष्ठ प्रमाण नहीं।
जानकारी – उत्खनन एवं अनुसंधान आधारित

3 सिद्धांत :

1. व्यापारी वर्ग प्रधानता : सिंधु घाटी सभ्यता वाणिज्य व्यापार की ओर अधिक आकर्षित थी। मिस्त्र, मेसोपोटामिया के साथ अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार।

- साक्ष्य : लोथल से 2 मुंह वाली फारस की मुहर प्राप्त।
  मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहर प्राप्त।
  अत : व्यापारी वर्ग द्वारा शासन संचालन।

2. पुरोहित वर्ग द्वारा शासन : पश्चिमी टीला जो दुर्गीकृत था, बाढ़ से सुरक्षित था। पुरोहित वर्ग निवास स्थान। यज्ञ अनुष्ठान, सूर्य उपासना के प्रमाण।

- साक्ष्य : कालीबंगा, लोथल से अग्निकुण्ड प्राप्त, मोहनजोदड़ो से वृहद स्नानागार प्राप्त।

3. मातृसत्तात्मक राजनैतिक सत्ता :
अधिकांश मणमूर्ति एवं मूर्ति स्त्री वर्ग को समर्पित।

- साक्ष्य : हड़प्पा से उर्वरता देवी को निरूपित स्त्री की मणमूर्ति प्राप्त।

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

मोहनजोदड़ो से कांसे की नर्तकी की मूर्ति प्राप्त।

- सर्वमान्य मत : मातृसत्तात्मक राजनैतिक सिद्धांत
- नोट : हंटर के अनुसार मोहनजोदड़ो का शासन राजतंत्रात्मक न होकर जनतंत्रात्मक था।
- व्हीलर के अनुसार : सिंधु सभ्यता का शासन मध्यवर्गीय जनतंत्रात्मक था।

Que. सिंधु घाटी सभ्यता के पतन पर टिप्पणी लिखिए।

Ans. सिंधु घाटी सभ्यता (2350 इ.पू. – 1750ई.पू.)

इसके पतन के कारणों में विद्वानों के विभिन्न मत थे।

पतन के कारण	विद्वानों के मत
आर्यो का आक्रमण	मार्टीलर व्हीलर
बाढ़	जॉन मार्शल अनेस्ट मैके
मलेरिया प्रकोप	केनेडी
जलवायु परिवर्तन	आरेल स्टाइन अमलानंद घोष
अदृश्य गाज/बिजली	दिमित्री देव
विवर्तनिक हलचल (भूकम्प)	जॉर्ज डेल्स
जनसंख्या वृद्धि के कारण संघर्ष	टी.एच.लैम्ब्रिक

सर्वमान्य मत : जॉन मार्शल द्वारा प्रतिपादित बाढ़ सिद्धांत

साक्ष्य : सिंधु घाटी सभ्यता के पतन (1750 ई.पू.) के पश्चात 250 वर्षों तक किसी भी सभ्यता की उपस्थिति के प्रमाण नहीं।

Que. सिंधु घाटी सभ्यता की प्रासंगिकता एवं उपलब्धियों की विवेचना कीजिये।

Ans. सिंधु घाटी सभ्यता (2350 ई.पू. – 1750 ई.पू.)

इस सभ्यता की लिपि भावतचित्रात्मक (पिक्टोग्राफ) होने के कारण यह लिपि पढ़ी नहीं गई किन्तु उत्खनन एवं अनुसंधान के आधार पर इसकी महत्वपूर्ण योगदान है।

आधारभूत संरचनात्मक महत्व :

1. बेहतर सड़क संरचना :— पक्की ईंटों से निर्मित जल निकासी

2. ग्रिडनुमा सडक संरचना:—आयताकार संरचना

साक्ष्य : मोहनजोदड़ो से 10 किमी. चौड़ी सड़क (राजपथ) प्राप्त।

3. सिंचाई एवं सूखा प्रबंधन हेतु शैलकृत जलकुण्ड (धौलावीरा) से प्राप्त।

आर्थिक महत्व

विनिमय हेतु मुहरों का प्रयोग (शैलखड़ी से निर्मित)

साक्ष्य : मोहनजोदड़ो से वृषभ मुद्रा, पशुपतिनाथ मुहर प्राप्त

- मापतौल हेतु हाथी दांत का पैमाना (दशमलव पद्धति पर आधारित)
- बन्दरगाह के साक्ष्य प्राप्त – लोथल, सुरकोटदा
- मेसोपोटामिया मिस्त्र के साथ अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रमाण

  साक्ष्य : मोहनजोदड़ो से मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहर प्राप्त
- लोथल से मिस्त्र का ममी मॉडल प्राप्त
- विश्व में पहली बार कपास की खेती का प्रमाण

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

साक्ष्य : हड़प्पा से सूती कपड़ा प्राप्त

- विश्व में पहली बार तांबे एवं कांसे (तांबा+टिन) का प्रयोग।

साक्ष्य : हड़प्पा से तांबे की इक्कागाड़ी मोहनजोदड़ो से कांसे की नर्तकी की मूर्ति प्राप्त।

सामाजिक महत्व

1.मातृसत्तात्मक समाज – प्रगतिशील विचारधारा

साक्ष्य: हड़प्पा से स्त्री की मणपूर्ति प्राप्त

उर्वरता देवी को निरूपित।

2. बहुफसली कृषि पद्धति–कृषि प्रधान समाज

साक्ष्य : लोथल से धान, बनवाली से जौ, हड़प्पा से गेहूं एवं अन्नागार प्राप्त

- वर्ण व्यवस्था के प्रमाण नहीं
- जन्म के आधार पर सामाजिक बंधन नहीं।

धार्मिक महत्व

- मंदिर के अवशेष प्राप्त नहीं।
- मातृदेवी, प्रकृति पूजा के साक्ष्य।

साक्ष्य : हड़प्पा से उर्वरता देवी की मणमूर्ति प्राप्त।

मोहनजोदड़ो से वृहद स्नानागर

कालीबंगा से अग्निकुण्ड के साक्ष्य

नोट : वृहद स्नानागार– सूर्य देवता को जल अभिषेक का अनुमान

निष्कर्ष : सिंधु घाटी सभ्यता भारत की सबसे प्राचीन विकसित सभ्यता थी जो कि सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं दृष्टि से अपनी पश्चातवर्ती सभ्यता–वैदिक सभ्यता से प्रगतिशील थी।

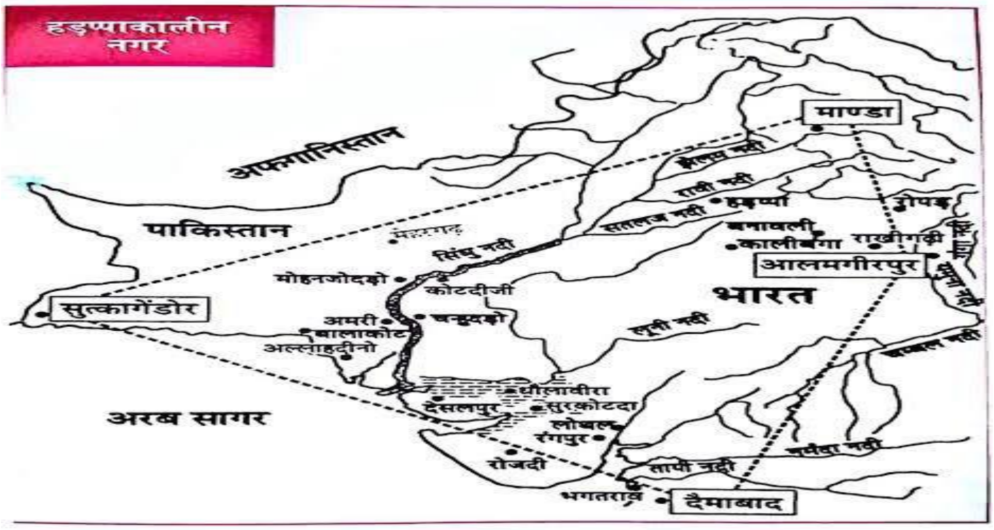

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

वैदिक काल

कालखण्ड | उत्पत्ति कर्ता | स्त्रोत | विशेषताऐं

कालखण्ड:
- श्रगवैदिक काल — 1500 ई.पू. – 1000 ई.पू.
- उत्तर वैदिक काल — 1000 ई.पू. – 600 ई.पू.

- वैदिक शब्द 'विद्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है – ''जानना या ज्ञान ''
- उत्पत्ति कर्ता : आर्य
- आर्य शब्द का अर्थ है। कुलीन या श्रेष्ठ
- आर्य शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1853 में मैक्समूलर ने किया।
- ऋग्वेद में 33 बार आर्य शब्द का प्रयोग किया गया है।
- उत्पत्ति के निवास स्थान को लेकर विद्वानों के 2 मत है।

1. भारत में मूल स्थान
2. भारत के बाहर मूल स्थान

भारत में आर्यो का मूल स्थान

मूल स्थान	विद्वानों के मत
कश्मीर हिमालय प्रदेश	L.D. कल्हर
सप्त सैंधव प्रदेश (सिंधु दोआब क्षेत्र)	A.C. दास
बह्मर्षि प्रदेश (गंगा–जमुना दोआव क्षेत्र)	गंगानाथ झा
मध्य देश (विंध्याचल प्रदेश)	राजबलि पाण्डे

भारत के बाहर आर्यो का मूल स्थान

मूल स्थान	विद्वानों के मत
आर्कटिक क्षेत्र	बाल गंगाधर तिलक
हंगरी (डेन्यूब नदी क्षेत्र)	गाईडलस
बैक्ट्रिया (मध्य एशिया)	मैक्स मूलर
देविका प्रदेश (अफगानिस्तान)	D.S. त्रिवेदी
पामीर का पठार (तिब्बत क्षेत्र)	दयानंद सरस्वती

सर्वमान्य मत : मैक्स मूलर द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत – बैक्ट्रिया (मध्य एशिया) स्थान माना गया ।

साक्ष्य :

1. बोगाजकोई अभिलेख (1400 ई.पू.) (मध्य एशिया) में चार वैदिक देवताओं–इन्हें मित्र, वरूण, नासत्य (अश्विन देवता) वर्णन।
2. कस्सी का अभिलेख:(1600 ई.पू.) (ईरान) में वर्णन–ईरानी आर्यो की एक शाखा भारत की तरफ पलायन हुई
3. ईरानी ग्रंथ : जेंद अवेस्ता के सिद्धांत ऋग्वेद से समानता।

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

स्त्रोत

- पुरातात्विक
  - बोगाज कोई अभिलेख (बैक्ट्रिया)
  - कस्सो का अभिलेख (ईरान)
- साहित्यक
  - वेद
  - बाह्मण ग्रंथ
  - आरण्यक ग्रंथ
  - उपनिषद
  - पुराण, महाकाव्य
  - षटदर्शन

नोट : → वेदों को श्रुति साहित्यक भी कहते है। क्योंकि वैदिक लोगों को लिपि का ज्ञान नहीं था (लेखन कला से अपरिचित) इसलिये ये सभी साहित्य ऋग्वैदिक काल में नहीं लिखे गये।

→ लोगों ने एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मोखिक रूप से इनका हस्तांतरण किया।

→ कालांतर में कृष्ण दोपायन (वेदव्यास जी) ने इनका संकलन किया।

- ऋग्वेद में मात्र ऋग्वैदिक काल की जानकारी है। 'उत्तर वैदिक काल' की जानकारी हमें – सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, पुराण, महाकाव्य , बाह्मण ग्रंथ, उपनिषद अरण्यक ग्रंथ से मिलती है।

वेद(4)

- ऋग्वेद
- यजुर्वेद
- सामवेद
- अथर्ववेद

1. ऋग्वेद :

- ऋग्वैदिक काल की जानकारी का एक मात्र स्त्रोत
- सबसे प्राचीन वेद
- संकलन कर्ता – कृष्ण दौपायन (वेद व्यास जी)
- देवताओं की स्तुति एवं प्राथनाऐं पर केन्द्रित
- विषय वस्तु – इयके प्रत्येक मंत्र अग्नि देवता की उपासना से प्रारम्भ होते है।

घटक

10 मण्डल	8 अष्ठक	1028 सुक्त	10580 मंत्र

जनक – बह्मा
उपवेद – आयुर्वेद
पुरोहित – होतृ ऋषि
भाग – 3 (शाकल, बालखिल्ल, बास्कल)

विशेषताऐं :

- ऋग्वेद के तीसरे मण्डल में गायत्री मंत्र का उल्लेख है। जिसके रचयिता 'विश्वामित्र' ऋषि है। यह सूर्य देवता (सविता) को समर्पित है।

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

- ऋग्वेद के 7वें मण्डल में दसराज्ञ युद्ध का वर्णन मिलता है।
- ऋग्वेद के 10वें मण्डल में पुरूष सुक्त का वर्णन– 4 वर्णो (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र) का उल्लेख है।
- युनेस्को द्वारा ऋग्वेद को विश्व मानव धरोहर के साहित्य में शामिल किया।

ऋग्वैदिक कालीन भौगोलिक विस्तार (1500 ई.पू.–1000ई.पू.)

- आरंभिक जानकारी स्त्रोत – ऋग्वेद
- निवास स्थान – सप्त सैंधव प्रदेश (सिंधु एवं सहायक नदियां क्षेत्र शतुद्रि, विपासा, परूष्णी, आस्किनी)

भौगोलिक विस्तार

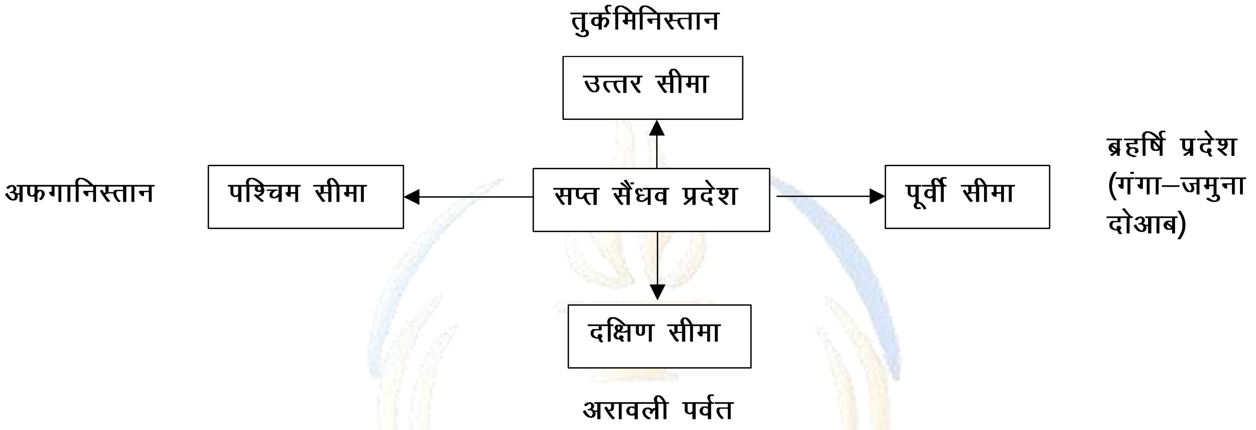

साक्ष्य :

- ऋग्वेद में हिमालय पर्वत के लिये मुजंवत पर्वत के नाम का उल्लेख है।
- ऋग्वेद के 10 वें मण्डल के नदी सुक्त में 21 नदियों का वर्णन
- सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदी – सिंधु
- सबसे पवित्र नदी – सरस्वती
- गंगा नदी का 1 बार यमुना नदी का 3 बार उल्लेख
- 10वें मण्डल नदी सुक्त में वर्णन–सरस्वती नदी के लिये – नदीतमा, देवतमा, मातमा शब्द का प्रयोग
- 21 नदियों का वर्णन

प्रमुख नदी

ऋग्वैदिक नाम	आधुनिक नाम
क्रुम	कुर्रम
वितस्ता	झेलम
आस्किनी	चिनाब
परूषणी	रावी
शतुद्रि	सतलुज
विपाशा	व्यास
सदानीरा	गंडक
कुम्भा	काबुल

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

ऋग्वैदिक कालीन सामाजिक जीवन

समाज	स्त्री दशा	खान–पान	वेशभूषा	रीति–रिवाज	मनोरंजन व शिक्षा

समाज

- पितृसत्तात्मक समाज
- समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार– संयुक्त परिवार की प्रथा मातृ पक्ष एवं पितृ पक्ष एक साथ रहते थे।
- परिवार का मुखिया – पिता जिसे 'कुलप' की संज्ञा दी गई।
- समाज में वर्णव्यवस्था विद्यमान
- पुरूष सुक्त में : साक्ष्य– ऋग्वेद के 10वें मण्डल के 4 वर्णो का उल्लेख
  1. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र
- किन्तु वर्णव्यवस्था कर्म प्रधान थी एक ही परिवार में अलग–अलग वर्णों के लोग रहते थे।
- उपनयन, संस्कार, यज्ञ, अनुष्ठान, शिक्षा में चारों वर्णों को समान अधिकार

स्त्री दशा

- प्राचीनकाल में सर्वश्रेष्ठ स्थिति
- स्त्रियों को प्रमुख अधिकार थे
  अधिकार – सभा, समिति में भाग लेना, यज्ञ, अनुष्ठान में भाग लेना, विधवा विवाह, उपनयन संस्कार अन्तरजातीय विवाह, शिक्षा।
- निषेध – बाल विवाह, सतीप्रथा, पर्दाप्रथा, ।
- प्रमुख विदुषी – लापामुद्रा, अपाला, घोषा
- अमाजू प्रथा – पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करने का अधिकार।
- ऋग्वेद में स्त्री हेतु 'जायदेस्तम' शब्द का उल्लेख – पत्नी ही घर है।
- श्लोक – यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते → रमन्ते तत्र देवता,
  अर्थ – जिस घर में नारी का सम्मान होता है वहां देवताओं का वास रहता है।

खान–पान

- शाकाहारी एवं मांसहारी
- साक्ष्य – ऋग्वेद में शाकाहारी पदार्थ का उल्लेख
  अर्थात क्षीर पकोदन – दूध + यव/जौ
  करम – दही + जौ
- पैय पदार्थ – सोसरस सुरा–शराब (मूजवत पर्वत से प्राप्त)
- मांसहारी – बैल, भेड़, बकरी के मांस की जानकारी
- गाय को अघन्या कहा गया गया है (वध ने करने योग्य) क्योंकि गाय पूज्य पशु थी।
- नोट – ऋग्वैदिक लोगों को नमक रोटी, चावल, मछली की जानकारी नहीं थी।

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

वस्त्र

- वेशभूषा – परिधान, आभूषण का वर्णन
  परिधान(वस्त्र) – ऊनी वस्त्र
- साक्ष्य – ऋग्वेद में उल्लेख
  नीवी – कमर के नीचे का वस्त्र
  वासन – कमर के ऊपर का वस्त्र
  अधोवास – वस्त्र के ऊपर (दुपट्टा), शॉल
  उपड़ी– पगड़ी

- आभूषण :–
  भुजबंद – हाथों के लिये
  कणशोमन – कानों के लिये
  रूकम – गले का हार
  निष्क – सोने का हार

रीति–रिवाज

- विवाह संस्कार – 2 प्रकार –समान गोत्र विवाह वर्जित
- अनुलोम विवाह – उच्चवर्ण पुरूष + निम्न वर्ण कन्या
- प्रतिलोम विवाह – उच्चवर्ण कन्या + निम्न वर्ण पुरूष
- उपनयन संस्कार – जनेऊ धारण करने का अधिकार, यज्ञ अनुष्ठान करने का अधिकार–गाय प्राप्ति की कामना
- अंतेष्टि – सामान्यतः अग्नि द्वारा दाह संस्कार
- शिक्षा – शिक्षक के रूप में गुरू का उल्लेख →
  प्रमुख गुरू – वशिष्ठ, विश्वामित्र जी
  विद्षी–अपाला, लोपामुद्रा, घोषा

  गुरूकुल शिक्षालय
  भाषा – संस्कृत

- मनोरंजन के साधन :
  रथदौड़, घुड़दौड़, शिकार, धुत क्रीड़ा (जुआ खेलना)
  नृत्य गायन, नाटक, त्योहार, पर्व मनाना।

- निष्कर्ष : ऋग्वैदिक कालीन समाज एक आदर्श समाज की परिकल्पना प्रस्तुत करता है। जहां कर्म के आधार पर समाज विभाजित थी। महिलाओं की स्थिति सर्वश्रेष्ठ थी।
  इसके महत्व को देखते हुऐ 18वीं शताब्दी के महान समाज सुधारक दयानंद सरस्वती जी ने 'वेदों की ओर लोटो' को नारा दिया।

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

प्रश्न—ऋग्वैदिक कालीन आर्थिक जीवन

ऋग्वैदिक काल (1500 ई.पू.—1000 ई.पू.)

आर्थिक जीवन

- कृषि (1)
- पशुपालन (2)
- परिवहन (3)
- शिल्पउद्योग (4)
- व्यापार वाणिज्य (5)
- विनिमय के साधान (6)

- ऋग्वैदिक कालीन आर्यों की संस्कृति ग्रामीण थी।
- पशुपालन – प्राथमिक पेशा था।

1. कृषि : द्वितीयक पेशा

साक्ष्य : ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल में वर्णन

उपजाऊ खेत – उर्वरा
जुते हुये खेत – क्षेत्र
हल की रेखा – सीता

प्रमुख फसल :

यव – जौ
धान्य – अनाज

सिंचाई के साधन :

स्वंयजा – वर्षा द्वारा
खनितमा – कुआं तालाब

2. पशुपालन : प्राथमिक व्यवसाय

महत्व
- क) कृषि में जुताई हेतु
- ख) यातायात के साधन में
- ग) विनिमय हेतु
- घ) भोजन के रूप में

सर्वाधिक प्रिय पशु : गाय

गाय
- लोगों द्वारा प्राथनाओं में गाय की कामना
- गाय की हत्या करने पर मत्युदण्ड। गाय को अघन्या कहा जाता था

दूसरा महत्वपूर्ण पशु : घोड़ा
अन्य पशु : बैल, भेड़, बकरी, कुत्ता, ऊँट
नोट : ऋग्वैदिक कालीन व्यक्तियों को बाघ एवं हाथी की जानकारी नहीं।

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

- शिल्प एवं उद्योग
  वस्त्र उद्योग – ऊनी वस्त्र निर्माण

- ऋग्वेद में चर्चा
  सीरी – कपड़ा बुनने वाली महिला
  तन्तुबाय – जुलाहा
  नोट : ऋग्वेद काल में कपास का ज्ञान नहीं।

- धातु उद्योग
  सोना, तांबा, कांसा निर्मित ।
  तांबा एवं कांसे हेतु 'अयश' शब्द का प्रयोग।
  नोट : ऋग्वैदिक कालीन लोग चांदी एवं लोहे से अपरिचित।

- शिल्प उद्योग
  बढ़ईकार, कुम्भकार (कुम्हार)
  चर्मकार –जानवरों की खाल को निकालना
  ऋग्वेद में बढ़ई हेतु तक्षन एवं कुम्भकार हेतु कुलाल शब्द का प्रयोग

- व्यापार–वाणिज्य
  सीमित व्यापार–
  अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रमाण नहीं
  समुद्रीय व्यापार के साक्ष्य नहीं
  निजी सम्पत्ति की संकल्पना नहीं
  प्रमुख व्यापारिक वस्तुऐं – वस्त्र, मृदभाण्ड, जानवरों की खाल।

- विनिमय के साधन : मुद्रा का प्रयोग नहीं ।
  वस्तु विनिमय प्रणाली–गाय, घोड़ा, निष्क (स्वर्ण आभूषण) का प्रयोग

निष्कर्ष : ऋग्वैदिक कालीन अर्थव्यवस्था ग्रामीण संस्कृति की द्योतक जीवन थी। जिसमें आर्थिक क्षेत्र का महत्व जीवन निर्वाह हेतु।
अतः संसाधनों का न्युनतम दोहन।
मानव–प्रकृति सहजीविता पर केन्दित अर्थव्यवस्था।

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

- सैन्य प्रशासन : स्थाई सेना नहीं, युद्ध के दौरान शारीरिक रूप से मजबूत कबीलाई लोगों द्वारा गठित। इसे मिलिशिया कहा जाता था।

- कर व्यवस्था : स्वैच्छिक कर व्यवस्था थी जिसे बलि कहा जाता था।
प्रजा द्वारा राजा को दिया जाता था जिसके बदलें मं राजा द्वारा सुरक्षा की जिम्मेदारी थी।

- संस्थाऐं : 5 प्रकार

1. सभा : श्रेष्ठ लोगों की संस्था
न्याय देने का कार्य
स्त्रियों को भी भाग लेने का अधिकार

2. समिति : सामान्य जन्म की संस्था
कार्य – राजा का चुनाव

3. विदभ : आर्यों की प्राचीन संस्था
कार्य – सामाजिक धार्मिक निर्णय

4. परिषद : विद्वान, पुरोहित की संस्था

5. गण : कुलीन वर्ण की संस्था
प्रमुख – ज्येष्ठक

निष्कर्ष : ऋग्वैदिक कालीन राजनैतिक व्यवस्था भारत की प्रथम राजतंत्रात्मक गणतंत्र व्यवस्था थी। जिसमें ना तो राजा निरकुंश था न ही बाहयकारी कर व्यवस्था थी।
यह 'कल्याणकारी राज्य की अवधारणा पर आधारित थी।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

❖ उत्तर वैदिक काल :– 1000 ई.पू. – 600 ई.पू.

जानकारी स्त्रोत

3 वेद ब्रह्रामण अरण्यक ग्रंथ उपनिषद महाकाव्य 6 दर्शन पुराण

1. यजुर्वेद :
   याज्ञिक कर्मकाण्ड, अनुष्ठान, बलिदान प्रथा का उल्लेख
   भाषा शैली : गद्य एवं पद्य
   भाग : 2

1. शुक्ल पक्ष (पद्य शैली) (वाजसनेयी)
2. कृष्ण यजुर्वेद

उपवेद – धनुर्वेद
जनक – विश्वामित्र जी
पुरोहित – अध्वर्यु

2. सामवेद : ऋग्वेद पर आधारित वेद
अधिकांश मंत्र, श्लोक ऋग्वेद से ही ग्रहण किये गये है।
विषय वस्तु : संगीत, गायन, नृत्य
उपवेद : गंधर्ववेद, जनक – नारदमुनि
भाषा शैली : पद्य
भाग : कौथुम, राणायनीय, जैमनीय
विशेष : भारतीय संगोत का जनक कहा जाता है।

3. अथर्ववेद : सबसे आधुनिक वेद
   ऋषि अथर्वा एवं अंगीरस ऋषि संकलनकर्ता
विषयवस्तु : जादू–टोना, वशीकरण, औषधियां, क्रषि को कीटों से बचाने की विधि क वर्णन।
पुरोहित : ब्रह्मा
उपवेद : शिल्पवेद, जनक – विश्वकर्मा
नोट : अथर्ववेद म सभा एवं समिति को बह्मा को दो पुत्री कहा गया है।

ब्रह्रामण ग्रंथ : वेदों को जनमास तक सरल एवं सुबोध भाषामें गद्य के रूप म प्रस्तुत करने के लिये इनकी रचन का की गई है।

4 वेदों के ब्रह्रामण ग्रंथ

- ऋग्वेद : ऐतरय व कौषतिकी
- यजुर्वेद : शतपथ व मैत्रायनी
- सामवेद : पंचविश व षडविश
- अथर्वद : गोपथ

अरण्यक ग्रंथ : अरण्यक शब्द से उत्पादित जिसका अर्थ होता है ' जंगल ।
जंगलों में ऋषियों द्वारा दिये गये रहस्यमयी एवं दार्शनक सिद्धांत पर आधारित ग्रंथ।
नोट : ऋग्वेद के आरण्यक ग्रंथ–ऐतरेय, काषतिकी।

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

उपनिषद : उपनिषद दो शब्दों से मिलकर बना है : उप–समीप व निषद–बैठना।

- शिष्यों द्वारा गुरूओं के समीप बैठकर दार्शनिक एवं आध्यात्मिक–आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि की शिक्षा गृहण कर उनके संकलन पर आधारित ग्रंथ उपनिषद कहलायें।
- मुक्तिका उपनिषद में उपनिषदों की संख्या 108 बताई गई है
- जवालोपनिषद में मानव के जीवनकाल हेतु 4 आश्रम व्यवस्था का वर्णन किया।
  बह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, सन्यास आश्रम।
- छंदोग्य उपनिषद में देवकी पुत्र कृष्ण का वर्णन
- कंठोपनिषद में नचिकेता एवं यम के मध्य संवाद का वर्णन
- भारत का राष्ट्रीय चिन्ह : अशोक स्तम्भ में उल्लेखित वाक्यांश 'सत्य:मेव:जयत' को मुण्डको उपनिषद से लिया गया है।
- 10 उपनिषद पर आदिगुरू शंकराचार्य ने भाष्य (टीका) लिखा है।
- मैत्रायनी संहिता में स्त्री को सुरा, जुआ के समान एक बुराई बताया है।
- तमसो मा ज्योतिर्गमय कथन – वृद्धारण्यक उपनिषद

❖ पुराण :

- भारतीय ऐतिहासिक कथाओं का सबसे क्रमबद्ध विवरण मिलता है।
- रचयिता – लोमहर्ष ऋषि एवं उनके पुत्र उग्रश्रृवा
- संख्या – 18

प्रमुख पुराण :

1. मत्स्य पुराण – सुंग एवं सातवाहन वंश की जानकारी
2. वायु पुराण – गुप्त वंश की जानकारी
3. विष्णु पुराण – मौर्य वंश की जानकारी

- 4 युगों का क्रमबद्ध विवरण : विष्णु पुराण में विष्णु के दशावतार में वर्णन
  1. सतयुग
  2. त्रेतायुग
  3. द्वापर युग
  4. कलियुग

  नोट : प्रत्येक आगामी युग को अपने विगत युग से निम्नतर बताया गया है।
  विष्णु भगवान के 10 अवतार की चर्चा–विष्णुपुराण।

- सतयुग :

1. मत्स्य अवतार : मछली–जलीय जीव–जीवों के विकास की संकल्पना
2. कर्म अवतार : कछुआ–उभयचर (जल+थल)
3. बराह अवतार : सुअर – थल का पशु
4. नरसिंह अवतार : अर्धमानव – पशु एवं मानव के बीच का अवस्था (मानसिक+शारीरिक)

- त्रेतायुग :

1. वामन अवतार : बौना – लघु मानव
2. परशुराम अवतार : घुम्मकड़ मानव
3. राम अवतार : राम – समुदाय एवं समय सामाजिक मानव

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

- द्वापर युग :
1. कृष्ण अवतार : पशु पालन को बढ़ावा देने वाले मानव
2. बुद्ध अवतार : कृषि एवं वाणिज्य कर्म को बढ़ावा देने वाले मानव धार्मिक अंधविश्वास का विरोध
- कलियुग :
  कम्रिक अवतार

  कल्कि : सम्पूर्ण शक्ति से युक्त मानव।

महाकाव्य — रामायण, महाभारत

- रामायण (संस्कृत शब्द रामायणम् राम+रामणम्) , शब्दिक अर्थ – राम की जीवन त्याग
  रचयिता – महर्षि वाल्मीकि जी
  श्लोक – 24 हजार
  भाग/काण्ड – 7
  भाषा – संस्कृत
  विषयवस्तु – श्रीराम के रूप में मर्यादा पुरूषोत्तम मानव के जीवन काल का विवरण जो एक आदर्श व्यक्तित्व, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श मनुष्य के परिचायक है।

- काण्ड – 7
  1.बाल काण्ड : अयोध्या राजा दशरथ द्वारा पुत्र प्राप्ति हेतु 3 यज्ञ एवं राजा दशरथ की 3 पत्नियों के जन्म का विवरण श्रीराम एवं लक्ष्मण जी के द्वारा ताड़िका सहस्त्रबाहु वध सीता जी एवं राम के विवाह का वर्णन ।
  2. अयोध्या काण्ड : राम जी द्वारा 14 वर्ष वनवास के आदेश का पालन चित्रकूट (उ.प्र) में राम , सीता , लक्ष्मण जी के निवास का वर्णन है। व राम–भरत का मिलाप का वर्णन है।
  3. अरण्य काण्ड : चित्रकूट से पंचवटी में शूर्पणखा के नाक, कान काटने की कथा। रावण द्वारा सीता हरण का वर्णन, राम जी द्वारा शबरी से भेंट का वर्णन मिलता है।
  4. किष्किन्धा काण्ड : राम लक्ष्मण द्वारा सीता जी की खोज। राम जी की सुग्रीव , हनुमान से भेंट का वर्णन
  , बालि का बध का वर्णन मिलता है।
  5. सुन्दर काण्ड : हनुमान जी द्वारा लंका की ओर प्रस्थान। सीता माता से भेंट।
  6. लंका काण्ड : राम जी द्वारा समस्य व समस्त वानर सेना के साथ लंका पर आक्रमण। कुम्भकर्ण वध, रावण वध की कथा। मेघनाथ–लक्ष्मण युद्ध । हनुमान द्वारा संजीवनी औषधि को लाना।
  7. उत्तर कांड : सीता, लक्ष्मण और वानर सेना के साथ भगवान राम जी की अयोध्या वापसी की चर्चा व सीता माता की अग्नि परीक्षा की वर्णन मिला।

महाभारत

- विश्व का सबसे वृहद साहित्यिक एवं पौराणिक ग्रंथ
- धार्मिक , पौराणिक, ऐतिहासिक एवं इसमें भारत के दार्शनिक ग्रंथ का विवरण मिलता है।
- रचयिता – कृष्ण दौपायन (वेद व्यास जी)
- लेखक – गणेश जी
- श्लोक – 1 लाख 10 हजार
- कालखण्ड – 1200–600 ई.पू.

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

- विषयवस्तु – कौरवों एवं पांडवों के मध्य आपसी संघर्ष की कथा।
- मुख्य पात्र – श्रीकृष्ण , अर्जुन, भीष्म, कर्ण, भीम, दुर्योधन, युधिष्ठिर, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा
- भाग – 18
- अन्य नाम – जय संहिता, भारत
- मुख्य पर्व : आदि पव्र , समापर्व, अरण्यकपर्व, विराट पर्व, भीष्म पर्व, द्रोण पर्व, कर्ण पर्व, शांति पर्व, स्वर्गारोहण पर्व

नोट : सभा पर्व में धूत क्रीड़ा एवं पाण्डवों वनवास का वर्णन (12 वर्ष वनवास)

- भीष्म पर्व – महाभारत युद्ध का पहला भाग
- द्रोण पर्व – अभिमन्यु वध, जभद्रभ वध पर्व
- कर्ण पर्व – कर्ण को कौरवों की सेना का सेनापति बनाया गया।
- सौप्तिक पर्व – अश्वत्थामा द्वारा पाण्डवों की सेना का सोये हुये वध करना
- स्त्री पर्व – गंधारी का मृत लोगों के लिए शोक
- शांति पर्व – युधिष्ठर का राज्य अभिषेक
- स्वर्ण रोहण पर्व – पाण्डवों की स्वर्ग यात्रा

- दर्शन सिद्धांत : दर्शन उस सिद्धांत को कहते है। जिसके द्वारा तत्व को जाना जा सके। तत्व–आत्मा, परमात्मा।
- भारतीय दर्शन तत्व सिद्धांत में षड्दर्शन (6 दर्शन) का विवरण

दर्शन	प्रवर्तक
योग	पतजंलि
सांख्य	कपिल मुनि
न्याय	गौतम ऋषि
वैशेषिक	कणाद
पूर्वमीमांशा	जैमेनी
उत्तर मीमांशा	बादरायण

1. सांख्य दर्शन :

- सबसे प्राचीन दर्शन
- मूल तत्व – 25
- प्रतिपादक – कपिल मुनि

2. योग दर्शन

- प्रतिपादक – पतजंलि
- मोक्ष प्राप्ति, आत्म नियंत्रण हेतु 8 क्रियाऐं 'प्राणायम'
- यम नियम आसन, प्रत्याहार, धारणा, स्मृति, समाधि।

3. न्याय दर्शनः

- ईश्वर को विश्व का सृष्टिकर्ता
- पदार्थों की व्याख्या
- प्रतिपादक – अक्षपाद गौतम

4.वैशेषिक दर्शन :

- सभी सृष्टि को 5 महाभूतों में वर्गीकृत
- पृथ्वी, उपज (जल), अग्नि, वायु, आकाश
- प्रतिपादक – कणाद/उलूक

5. पूर्व मीमांक्षा : पुनःर्जन्म में विश्वास

- वेदों को अंतिम प्रमाण स्वीकार्य
- प्रतिपादक : जैमेनी

6. उत्तर मीमांशा :

- केवल ब्रह्म को ही सत्य मानता है।

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

- प्रतिपादक – बादरायण

प्रश्न : ऋग्वैदिक एवं उत्तरवैदिक आर्थिक जीवन में अंतर :

आधार	ऋग्वैदिक काल (1500 ई.पू.–1000 ई.पू.)	उत्तर–वैदिक काल (1500 ई.पू–600 ई.पू)
मुख्य व्यवसाय	पशुपालन	कृषि
उद्योग–धंधे	सीमित उद्योग–सोना, तांबा, धातु	उद्योग–प्रसार लोहे के आविष्कार के कारण धातु निर्माण
व्यापार–वाणिज्य	सीमित–आंतरिक व्यापार	अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार वाजसनेयी संहिता 100 डंडे वाली नाव का उल्लेख
व्यापारिक घटक	असंगठित–बढ़ई कुम्भकार, जुलाहा	संगठित–व्यापारी सार्थवाह – घुम्मकड़ श्रेष्ठि वेकनाट– व्यापार निगम (सूदखोर)
विनिमय का माध्यम	वस्तु विनिमय प्रणाली गाय, घोड़ा, निष्क द्वारा व्यापार	निष्क नामक मुदा का प्रयोग। विनिमय के साधन हेतु सतमान–चांदी सिक्का
कर प्रणाली	स्वैच्छिक कर व्यवस्था 'बलि' शब्द का प्रयोग	अनिवार्य कर प्रणाली कर दर – 1/6

प्रश्न : ऋग्वैदिक कालीन एवं उत्तरवैदिक कालीन के सामाजिक जीवन में अंतर

आधार	ऋग्वैदिक काल (1500 ईपू. – 1000 ई.पू.)	उत्तर वैदिक काल (1000 ई.पू–600 ई.पू.)
वर्णव्यवस्था	कर्म प्रधान शुद्रो का समान अधिकार	जन्म प्रधान शुद्रो पर समाजिक बंधन आरोपित
परिवार	संयुक्त परिवार प्रथा मातृपक्ष–पितृपक्ष सहनिवास	मातृ पक्ष–पितृपक्ष निवास स्थान–अलग
स्त्री दशा	प्राचीन काल की सर्वश्रेष्ठ शिक्षा उपनयन संस्कार आदि का अधिकार	निम्नतर स्थिति, बाल विवाह, बहुपत्नी की शुरूआत, पर्दा प्रथा
खान–पान	यव– जौ सोमरस धान्य – अनाज	रोटी, चावल, नमक की जानकारी
रीति रिवाज	दो प्रकार विवाह संस्कार अनुलोम, प्रतिलोम	8 प्रकार विवाह संस्कार बह्म देव, गंधर्व, असुर, पिशाच
जीवन पद्धति	गृहस्थ जीवन पर मुख्य केन्द्र	जबाल उपनिषद में 4 आश्रम का उल्लेख, बह्मचर्य जीवन, गृहस्थ, वानप्रस्थ संयासी

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

प्रश्न : ऋग्वैदिक कालीन एवं उत्तरवैदिक कालीन के राजनैतिक जीवन में अंतर :

आधार	ऋग्वैदिक काल (1500 ईपू. – 1000 ई.पू.)	उत्तर वैदिक काल (1000 ई.पू–600 ई.पू.)
शीर्ष संस्था	जन – कबीला उदा. आर्य, अनार्य–भरत मंदु किवि, तुवर्श	जनपद–जन+जन दो कबीलों का संयुक्त पुरू+भरत = कुरू
भौगोलिक सीमा	सप्त सैंधव प्रदेश (सिंधु नदी दोआब)	ब्रहमर्षि प्रदेश गंगा–जमुना दोआब
राजा के कार्य एवं कर्तव्य	मुख्य कार्य–कबीले की सुरक्षा, गाय की सुरक्षा–गोपती संज्ञा	मुख्य कार्यः युद्ध द्वारा साम्राज्य विस्तार–भूपति, की उपाधि
प्रशासन : मंत्रण नामक '	पदाधिकारी व उल्लेख प्रमुख – पुरोहित	रत्निन नामक 12 पदाधिाकारी चर्चा प्रमुख – 2 सेनानी
संस्थाऐं	5 संस्था की जानकारी सभा, समिति विदभ परिषद, गण	केवल 2 संस्था, सभा, समिति अधिकारों में की
राजा का चुनाव	गणतंत्रात्मक सीमित	वंशनुपात राजतंत्र–देवीय सिद्धांत
सैन्य प्रशासन	अस्थाई सेना (मिलिशिया)	स्थाई सेना का गठन
कर व्यवस्था	'बलि' नाम स्वेच्छाकारी कर	अनिवार्य कर 1/16

प्रश्न : ऋग्वैदिक एवं उत्तर वैदिक कालीन के धार्मिक जीवन में अंतर

आधार	ऋग्वैदिक काल (1500 ईपू. – 1000 ई.पू.)	उत्तर वैदिक काल (1000 ई.पू–600 ई.पू.)
जानकारी स्त्रोत	केवल ऋग्वेद	सामवेद, यजुर्वेद, अर्थववेद, उपनिषद
प्रमुख देवता	इन्द्र, अग्नि, वरूण प्रमुख – इन्द्र	त्रिमूर्ति अवधारणा ब्रहमा, विष्णु, महेश प्रमुख – प्रजापति ब्रहमा
पूजा पद्धति	सादगी– यज्ञ अनुष्ठान–आंत्म संतुष्ठि	आडम्बर युक्त–वर्चस्व स्थापना 1. राजसूम यज्ञ 2. अश्वमेद्य यज्ञ 3. पुरूषमेध यज्ञ
आश्रम व्यवस्था	केवल शिक्षा प्राप्ति से संबंधित	जबालोप निषद में 4 आश्रम का उल्लेख– ब्रहमचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रास्थ, संन्यासी प्रत्येक काल – 15, वर्ष– 1
उपनयन संस्कार	सभी वर्गों की समान भागीदिरी	स्त्री एवं शुद्र वंचित–ब्रहमण, क्षत्रिय भिन्न–भिन्न प्रथा–जनेउ धारण 8 वर्ष – ब्रहमण 11 वर्ष – क्षत्रिय
धार्मिक लक्ष्य	आध्यात्मिक शुद्ध मोक्ष	भातिकवादी दान–दक्षिणा प्रथा की शुरूआत

6 वीं शताब्दी ई.पू.

महाजनपद काल

जन–जनपद–महाजनपद

16 महाजनपदों की जानकारी
- बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय
- जैन ग्रंथ भगवती सूत्र

महाजनपद	राजधानी	विशेष
1. कम्बोज	राजपुर	अर्थशास्त्र पुस्तक (कौटिल्य) में उल्लेख
2. गांधार	तक्षशिला पुष्कलावतो	अच्छे नस्ल घोड़े के लिये प्रसिद्ध गंधार शासक–पुष्कर सारिन
3. मत्स्य	विराट नगर	वर्तमान में राजस्थान में स्थित
4. करू (हरियाणा)	हस्तिनापुर	राजा पारीक्षित संबंधित महाभारत युद्ध (कौरव–पांडव) से संबंधित
5. सूरसेन	मथुरा	शासक अवंतिपुत्र
6. वत्स (इलाहाबाद)	कौशाम्बी	शासक–उद्दयन कालीदास ग्रंथ, 'स्वप्नवास दत्ता' का नामक
7. काशी	वाराणसी	कौशल नरेश प्रसेनजीत के अधीन
8. कौशल	श्रावस्ती (उत्तरी) कुशामती (दक्षिणी)	शासक प्रसेनजीत महात्मा बौद्ध ने सर्वाधिक वर्षा वास यहीं पर किया।
9. मगध	राजग्रह, पाटलिपुत्र	शासक – बिम्बसार (हर्यक वंश) अजातशत्रु
10. अंग	चम्पा	मगध शासक बिम्बसार द्वारा विजित
11. पांचाल	उत्तरी – अहिच्क्षत्र दक्षिणी – काम्पिलय	महाभारत काल में द्रोपदी से संबंधित क्षेत्र
12. वज्जि (बिहार उत्तरी क्षेत्र)	वैशाली	8 गणराज्य में बंटा। गणतंत्रात्मक व्यवस्था लिच्छवि गणराज्य राजा – चेटक
13. मल्ल (तराई क्षेत्र)	उत्तरी – पावा दक्षिणी–कुशीनगर	पावा में गौतम बौद्ध ने अंतिम भोजन ग्रहण किया। कुशीनगर में देह त्याग
14. चेदी (बुन्देलखण्ड)	शक्तिमती	शासक – शिशुपाल (महाभारत काल) से संबंधित।
15. अंवति	उत्तरी राजधानी – उज्जेयनी दक्षिणी राज. – माहिष्मती	शासक – चण्डप्रदोत मगध शासक बिम्बसार द्वारा चिकित्सक जीवन को भेजा चण्डप्रदोत के इलाज हेतु
16. अस्मक (आधंप्रदेश)	राजधानी – पैठन (गोदावरी नदी के किनारे)	दक्षिण भारत का एकमात्र स्थल जो 16 महाजनपद में शामिल था।

नोट :–

1) तक्षशिला का नाम भरत राजा के पुत्र 'तक्ष' के नाम पर पड़ा।
2) कोटिल्य तक्षशिला के प्रधानाचार्य रहे है।
3) कुरू महाजनपद की राजधानी हस्तिनापुर (मेरठ) बाढ़ में डूब गई तक उत्तराधिकारी निचक्षु ने कौशाम्बी को राजधानी बनाया।
4) यूनानी ग्रंथों में सुरसेन को महाजनपद शूरसेनोई कहा गया था।
5) वत्स महाजनपद शासक उदयन ने बौद्ध धर्म की दीक्षा ग्रहण की।
6) पांचाल महाजनपद की दोनों राजधानी उत्तरी – अहिच्छत्र व दक्षिणी – काम्पिल्य : गंगा नदी द्वारा विभाजित।
7) कौशल राज्य की राजधानी – उत्तरी–श्रावस्ती, दक्षिणी – कुशामती का सरयु नदी द्वारा विभाजन।

   सहेत–महेत अलेक्जेंडर कनिंघम द्वारा श्रावस्ती की आकृति अर्धचन्द्राकार बताई है।

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

<u>बौद्ध धर्म</u>

- प्रवर्तक – गौतम बुद्ध (मूल नाम – सिद्धार्थ)
- जीवनकाल – 563 ई.पू. – 483 ई.पू.
- जन्म स्थान – कपिलवस्तु के लुम्बिनी नामक स्थान (नेपाल)
- पिता – शुद्धोधन (शाक्य गणराज्य के राजा)
- माता – मायादेवी (महामाया –कोलिय वंश)
- पालन–पोषण – **<u>महाप्रजापति गौतमी (मौसी)</u>**
- पत्नी – यशोधरा
- संतान – राहुल (पुत्र)
- गुरू – अलार कलाम (इन्हीं से महात्मा बुद्ध ने **<u>सांख्य दर्शन की शिक्षा ग्रहण की</u>**) – रूद्रक रामपुत्र (द्वितीय गुरू)।
- सारथी–चाणक/चन्ना। घोड़े का नाम–कंथक।

- बचपन में ही ज्योतिर्षाचार्य द्वारा गौतम बुद्ध के सन्यांसी होने की भविष्यवाणी। पिता के द्वारा सिद्धार्थ का लालन–पालन सांसरिक सुखों की प्राप्ति पर ध्यान केन्द्रित था किन्तु एक बार <u>नगर भ्रमण</u> के दौरान बुद्ध को **<u>4 व्यक्तियों</u>** की अवस्था देखकर मन व्यतीत हुआ चार व्यक्ति–**<u>वृद्ध, रोगी, मृतक, सन्यासी</u>** को देखकर उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ।

- सन्यासी को सांसारिक दुःखों से रहित देखकर सिद्धार्थ गौतम ने **<u>29 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग</u>** दिया। इस घटना को बौद्ध धर्म में **<u>'महाभिनिष्क्रमण'</u>** कहा गया।

- सिद्धार्थ गौतम आध्यात्मिक ज्ञान की तलाश में राजगृह से उरवेला (बिहार) पहुँचे। जहाँ 5 ब्रह्मणों से ज्ञान प्राप्त किया एवं तप करने लगे। किन्तु तप मार्ग को निरर्थक मानकर उन्होंने **<u>सुजाता</u>** नामक कन्या के हाथ से खीर खाकर तप व्रत तोड़ दिया।
- उरबेला से बौद्धगया (बिहार) पहुँचे। यहीं पर सिद्धार्थ गौतम द्वारा पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर निरंजना नदी (आधुनिक नाम–फाल्गु नदी) के किनारें ध्यान साधना करने लगे। 6 वर्ष की कठिन साधना के पश्चात् 35 वर्ष की आयु में गौतम बौद्ध को आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति हुई और वह बौद्ध कहलाये। **<u>अन्य नाम – तथागत</u>**

- ज्ञान प्राप्ति पश्चात् गौतम बुद्ध सर्वप्रथम 'सारनाथ' पहुँचे। उन्हीं 5 ब्रह्मणों को गौतम बुद्ध द्वारा प्रथम उपदेश दिया गया।
- बौद्ध धर्म में इस घटना को धर्मचक्रप्रवर्तन कहा गया है (मृग सहित चक्र चित्रण)
- सारनाथ में ही गौतम बौद्ध द्वारा प्रथम संघ/मठ की स्थापना की गई
- इसके पश्चात् गौतम बौद्ध ने काशी कोशाम्बी, श्रीवस्ती में नगर भ्रमण कर उपदेश दिये।
- सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिये।
- जन सामान्य की भाषा में उपदेश– पाली भाषा।

- बौद्ध धर्म के अनुयायी 2 भागों में विभाजित थे।
  1. भिक्षुक : सन्यास जीवन व्यतीत करने वाले, बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु नगर भम्रण करते थे।
  2. उपासक : ग्रहस्थ जीवन में रहकर बौद्ध धर्म को मानने वाले।

  नोट : बौद्ध धर्म में प्रविष्टि होने को **<u>उपसंम्पदा</u>** कहा जाता है।

- बौद्ध धर्म के प्रमुख शिष्य : आनंद, उपालि, सारिपुत्र, महामोदगलायन, देवदत्त।

नोट : महात्मा बौद्ध की मृत्यु के पश्चात् देवदत्त संघ प्रमुख बनना चाहता था, किन्तु महात्मा बुद्ध ने किसी को भी संघ प्रमुख नहीं बनाया।

- प्रमुख अनुयायी : वैशाली की नगर वधु आम्रपालि, कुख्यात डाकु उंगलिमाल, व्यापारी अनांदपिण्डक ।
- अनाद पिण्डक ने जैतवन जैत **राजकुमार से खरीदकर गौतम बौद्ध को** भेंट किया।
- प्रमुख अनुयायी शासक – हर्यक वंश राजा बिम्बसार, अजातशत्रु, प्रसेनजित तथा उदयन (वत्ज महाजनपद)
- वत्स शासक उदयन के **शासनकाल में बौद्ध कोशाम्बी** आये।

  नोट : बौद्ध संघ में भिक्षुणी के रूप में स्त्रियों के प्रवेश की **अनुमति वैशाली** में दी गई (प्रथम भिक्षुणी संघ–वैशाली)।
  प्रथम भिक्षुणी– महाप्रजापति गौतमी

- महात्मा बुद्ध ने अंतिम उपदेश सुभद्ध परिव्राजक को दिया।
- 483 ई.पू. में मल्ल गणराज्य के कुशीनारा में 80 वर्ष की अवस्था में चुन्द नामक सुनार के यहां भोजन करने पश्चात् उदर पीढ़ा से गौतम बौद्ध ने देह त्याग दिया। इस घटना को बौद्ध धर्म में 'महापरिनिर्वाण' कहा गया।

  नोट : **बौद्ध धर्म के सबसे पवित्र त्योहार वैशाख पूर्णिमा** है क्योंकि इसका सम्बन्ध **बौद्ध के जन्म, ज्ञान की प्राप्ति एवं महापरिनिर्वाण** से है।

Note :

हीनयान – बुद्ध को महापुरूष माना।
महायान – बुद्ध को देवता माना। (बुद्ध मूर्ति पूजा की शुरूआत)
प्रथम मूर्ति – मथुरा कला (कनिष्क काल में)
हीनयान – आत्मादीपो भवः स्वंय के प्रकाश से ज्ञान प्राप्ति।
महायान – बुद्ध भिक्षुओं के प्रभाव से ज्ञान प्राप्ति।
बुद्ध को बोधिसत्व अवलोकितेश्वर – (पद्मपाणि)–वैदिकयुगीन देवता विष्णु माना।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

बौद्ध धर्म

प्रश्न : बौद्ध धर्म की लोकप्रियता के कारण लिखो। –(100 शब्दों में)

प्रवर्तक – गौतम बुद्ध (563 ई.पू.–483 ई.पू.)

लोकप्रियता के कारण :

1.जटिल दार्शनिक वाद–विवाद का न होना।
प्रमुख सिद्धांत – आचरण की शुद्धता

2. जन सामान्य लोक भाषा – पालि में उपदेश

3. महात्मा बुद्ध का प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं दार्शनिक कौशल।

4. राजकीय संरक्षण – अजातशत्रु, बिम्बसार, अशोक, कनिष्क, हर्षवर्धन ।

5. समय–समय पर प्रचार–प्रसार हेतु बौद्ध संगति का आयोजन

6. वर्ण व्यवस्था को अस्वीकृत – सामाजिक समानता दृष्टिकोण

प्रश्न : बौद्ध धर्म का प्रभाव :

उदय – 6वीं शताब्दी ई.पू.

प्रवर्तक – महात्मा बुद्ध

प्रभाव

1) सामाजिक समानता पर जोर व शुद्रो, स्त्रियों को संध में प्रवेश।
2) लोक कल्याणकारी विचाराधारा – आष्टांगिक मार्ग पालन के निर्देश।
3) वास्तुकला का विकास बौद्ध धर्म से प्रभावित शासकों आशोक, कनिष्क द्वारा मूर्ति, स्तूप, मठ, विहार का निर्माण।
उदा. सांची स्तूप, सारनाथ स्तूप, संघाराम स्तूप, मथुरा कला – मूर्ति
4) संसाधनों के उचित दोहन, क्षणिकवाद, सामाजिक समरसता, सहिष्णुता–मध्यमार्ग विचारधारा का विकास।
5) अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में सहायक। वर्तमान में चीन, जापान, दक्षिण–पूर्वी एशिया में लोकप्रिय।

प्रश्न : बौद्ध धर्म के पतन के कारण

महात्मा बुद्ध की मृत्यु के पश्चात् क्रमिक रूप से पतन विस्तार कनिष्क काल में चतुर्थ बौद्ध संगति के पश्चात् पतन की आधारिशला।

कारण

1) महात्मा बुद्ध का विष्णु का अवतार मानकर वैष्णव धम में बुद्ध धर्म का समावेश।
2) ब्राह्मणवादी कर्मकाण्डों का प्रारम्भ– मूर्तिपूजा, यज्ञ, अनुष्ठान–मथुराकला–बुद्ध मूर्ति
3) बौद्ध भिक्षुओं का जन सामान्य से दूर होकर विलासी जीवन अपनाना।
4) उपदेश हेतु लोक भाषा 'पालि' के स्थान पर संस्कृत को अपनाना–जन सामान्य तक पहंच में कमी।
5) आंतरिक मतभेद : हीनयान व महायान
6) राजकीय संरक्षण का अंत–शुंगकाल, गुप्तकाल–हिन्दु धर्म संरक्षक।

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

जैन धर्म

- कालक्रम – 6वी शताब्दी ई.पू.
- संस्थापक एवं प्रथम तीर्थंकर – **ऋषभदेव**
- प्रतीक चिन्ह – **वृषभ**
- इनका उल्लेख **ऋग्वेद में** मिलता है।
- 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे जो कि **काशी (वाराणसी)** के राजा अश्वसेन के पुत्र थे।
- **प्रतीप चिन्ह – सर्प**
- जैन धर्म के पंचमहाव्रत **में से 4 महाव्रत** का प्रतिपादन पार्श्वनाथ मुनि द्वारा।
- –(सत्य, अहिंसा, अस्तेय (चोरी ना करना) , अपरिग्रह (अत्यधिक धन संचय ना करना))
- सम्वेद शिखर (मधुबनी पहाड़ी झारखण्ड) तीर्थस्थल इन्हीं से संबंधित – **समाधि स्थल**
- 19वें तीर्थंकर–मल्लिनाथ स्त्री थे जिनका प्रतीक चिन्ह – **जल कलश** था।
- 24वें तीर्थंकर – महावीर स्वामी (इन्हें ही वास्तविक संस्थापक माना जाता है।) इन्हीं के काल में जैन धर्म को सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त की।

महावीर स्वामी

- जन्म **599 ई.पू. में वैशाली** गणराज्य के कुण्डग्राम में हुआ।
- बचपन का नाम – वर्धमान
- भद्रबाहु द्वारा रचित (कल्पसूत्र) महावीर स्वामी के जीवन चरित्र से संबंधित है।
- पिता – सिद्धार्थ (ज्ञात्रक कुल के गणराज्य)
- माता – त्रिशला (**लिच्छिवी कुल के राजा चेटक की बहन**)
- पत्नी – यशोदा
- पुत्री – प्रियदर्शनी (अनोज्जा)
- 30 वर्ष की अवस्था में बड़े भाई **नंदीवर्मन** की अनुमति प्राप्त कर गृह त्याग किया।
- 12 वर्ष की कठोर साधना के पश्चात् **ऋजुपालिका नदी** के तट पर **साल वृक्ष** के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ।
- पूर्ण ज्ञान प्राप्ति के पश्चात्–**केवलज्ञ, केवलय कहलाये।**
- इंद्रियों पर विजय प्राप्त की – **जितेन्द्रिय।**
- अतुल पराक्रम – महावीर
- बन्धहीन – निग्रंथ (अनुयायिचों को भी निग्रंथ कहा जाता है।)
- प्रतीक चिन्ह – सिंह
- प्रथम उपदेश – अर्धमागधी भाषा प्राकृत में दिया।
- प्रथम शिष्य – जामिल/जमालि (प्रियदर्शनी के पति)
- प्रथम जैन भिक्षुणी – **चम्पा**
- चौदह पूर्व – जैन धर्म पूर्वकालिक ग्रंथ/संकलन – (भद्रबाहु)
- **अन्य शिष्य – मक्खलिगोसाल**
  किन्तु कालांतर में जैन धर्म त्याग कर **नवीन धर्म 'नियतिवाद' का प्रतिपादन** किया।

- भाग्य ही सब कुछ निर्धारित करता है, मनुष्य असमर्थ है – **आजीवक संप्रदाय की स्थापना।**
- सुधर्म – महावीर स्वामी की मृत्यु के पश्चात् संघ प्रमुख
- भद्रबाहु, स्थूलभद्र (जैन मुनि)

जैन धर्म के दार्शनिक सिद्धांत

1. पंच महावृत्त – नैतिक सिद्धांत

- सत्य – सदैव सत्य बोलना, बिना विचारे किसी विषय मे ना बोलना।
- अंहिसा – मन, वाणी, कर्म से किसी को दुःख ने पहुँचाना।
- अस्तेय – चोरी ना करनाः– किसी दूसरे की वस्तु को उसकी अनुमति के बिना ग्रहण न करना।
- अपरिग्रह – साधनों एवं सम्पत्ति का अतिशय संग्रह ना करना।
- ब्रह्मचर्य – मन, वचन, कर्म से वासनाओं का त्याग।
- महावीर स्वामी देह त्याग **527 ई.पू.** में 72 वर्ष की आयु में राजगृह के समीप **पावापुरी** नामक स्थान जिला नालंदा में किया।
- जैन धर्म में **गृहस्थों** के लिये **पंच महावृत** का पालना करना संभव नहीं है इसलिए **आंशिक रूप से** इनके पालन हेतु – **अणुव्रत = पंचव्रत**
  1. अंहिसाणुव्रत
  2. सत्याणुव्रत
  3. अस्तेयाणुव्रत
  4. ब्रह्मचर्याणुव्रत
  5. अपरिग्रहाणुव्रत

2. जैन धर्म के त्रिरत्न

- मनुष्य को निर्वाण या कैवल्य प्राप्ति या कर्म बन्धनों से मुक्ति का मार्ग बताने वाले जैन धर्म सिद्धांत
- सम्यक दर्शन – जैन सिद्धांत में पूर्ण आस्था एवं विश्वास रखना।
- सम्यक ज्ञान – सच्चा एवं पूर्ण **ज्ञान प्राप्त करना**। **सत्य–असत्य के मध्य भेद स्पष्ट भेद**
- सम्यक चरित्र – **सही आचरण करना**

इन्द्रियों एवं कर्मों पर पूर्ण नियंत्रण रखना

जीवन में सुख–दुःख के प्रति सम्भाव रखना।

3. बंधन एवं मोक्ष अवधारणा

- बंधन का अर्थ – कर्म/इच्छाओं की प्रक्रिया में उलझे रहना।
- मोक्ष का अर्थ – अनंत ज्ञान (कैवल्य) की प्राप्ति।
- जैन मतानुसार – जीव (मनुष्य) अनंत चतुष्ट्य ये मुक्त होता है – अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, **अनंत वीर्य** (साहस) अनंत आनन्द।

  किन्तु अज्ञानता एवं इच्छाओं के पूर्ति के प्रति आसक्ति के कारण बंधन में पड़ जाता है।

  नोट : जैन दर्शन में बुरे कर्मों की 'कषाय' कहा गया है।

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

- बंधन की प्रक्रिया दो चरणों में होती है।
  1. आस्रव– कर्म पुद्गल कर्मों का जीव की ओर प्रवाह
  2. बंध – कर्म पद्गलों का जीव में प्रवेश उसे जकड़ लेना।
- बंधन की प्रक्रिया में जीव के स्वाभाविक लक्षण अनंत चतुष्ट्य नष्ट नहीं होते लेकिन **तिरोहित** हो जाते है। जैसे बादलों से सूर्य का प्रकाश कुछ देर के लिये ढक जाता है। इस बंधन से मुक्ति हेतु **मोक्ष अनिवार्य**
- **मोक्ष की प्रक्रिया 2 चरण में पूर्ण होती है।**
  1. संवर – नए कर्म पुद्गलों या इच्छाओं को आत्मा से जुड़ने से रोकना।
  2. निर्जरा – जीवात्मा से पुराने कर्म पुद्गलों या इच्छाओं का नाश।
- **मोक्ष प्राप्ति के साधन : त्रिरत्न**

त्रिरत्न

1. सम्यक दर्शन 2. सम्यक ज्ञान 3. सम्यक चरित्र

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P.474002
Cont. No.9425404428, 9425744877

बौद्ध धर्म के त्रिपटक : बौद्ध धर्म ग्रंथ

1. सुक्त पिटक : गौतम बुद्ध के नैतिक दर्शन एवं सिद्धांत का उल्लेख।
2. विनय पिटक : संघ संबंधित नियम एवं दैनिक जीवन संबंधी आचरण संग्रह।
3. अभिधम्म पिटक : बौद्ध दर्शन का संग्रह।

- सुक्त पिटक का संकलन बौद्ध भिक्षुक आनंद ने किया।
- अभिधम्म पिटक का संकलन कर्ता – मोगली पुत्त तिस्स।
- यमक बुद्ध पिटक अभिधम्म पिटक का भाग है।
- जातक कथाऐं – बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाऐं संख्याऐं – 550

बौद्ध दर्शन के प्रमुख सिद्धांत :

1. त्रिरत्न : बुद्ध, धम्म, संघ।
2. बौद्ध धर्म में 4 आर्य सिद्धांत

I) संसार दुखमय है।

II) दुःख समुदाय – दुःख का कारण है।

III) दुःख निरोध – उपाय

IV) दुःख निरोध गामनी प्रतिपदा (दुःख निवारण हेतु आष्टांगिक मार्ग)

आष्टांगिक मार्ग (धर्मचक्रप्रवर्तन सुक्त की विषयवस्तु)

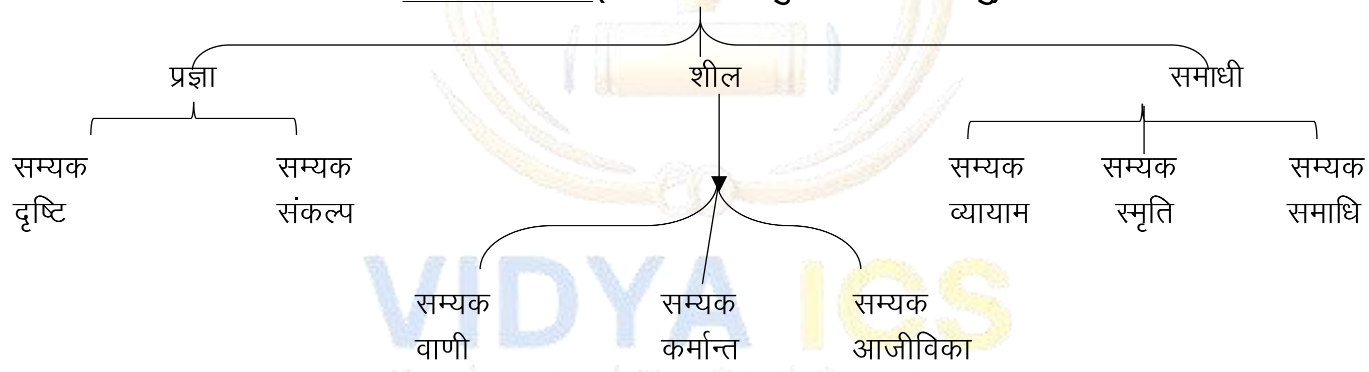

1) सम्यक् दृष्टि : चार आर्य सत्यों का समुचित ज्ञान

2) सम्यक् संकल्प : चार आर्य सत्यों का पालन करने की प्रतिज्ञा

3) सम्यक् वाक् : शांतिपूर्ण, उदारयुक्त वचन, मधुरवाणी

4) सम्यक् कर्मान्त : शांतिपूर्ण, नैतिक आचरण

5) सम्यक् आजीविका : प्राणीमात्र को क्षति पहुँचाऐं बिना धन अर्जन करना

6) सम्यक् व्यायाम : आत्म नियंत्रण का प्रयत्न, लोभ, मोह, काम, क्रोध विकार पर नियंत्रण

7) सम्यक् स्मृति : सक्रिय चेतना द्वारा स्वंय को जानना

8) सम्यक् समाधि : जीवन रहस्य पर गंभीर चिंतन

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

अनात्मवाद / क्षणिकवाद

- बौद्ध दर्शन ने भारतीय दर्शन के विपरीत आत्मा को शाश्वत एवं स्वतंत्र ना मानकर सांसारिक वस्तुओं की भांति क्षणिक एवं परिवर्तनशील माना है।
- बौद्ध ने आत्मा के अस्तित्व का खण्डन न करते हुये मध्यमार्गी विचारधारा के तहत आत्मा को क्षणिक अनुभूतियाँ एवं संवेदनाओं को समूह माना है।
- बौद्ध के अनुसार जब भी मैं नित्य आत्मा को खोजने हेतु अपने चेतना अवस्था में प्रवेश करता हूँ तो सुख, दुःख, भूख, प्यास आदि अनुभतियों से टकराकर वापस आ जाता है।
- यह संवेदनाऐं इतनी तीव्रता से प्रभावित होती है कि हमें स्थाई आत्मा का भ्रम हो जाता है।

तर्क :

1. दीपक की लौ – सामान्य रूप से देखने पर स्थिर दिखाई पड़ती है किन्तु एक लौ नष्ट होती है। दूसरी लौ उसका स्थान ग्रहण कर लेती है।
2. नदी की धारा – हम एक नदी धारा में दो बार स्नान नहीं कर सकते।
3. बीज भी परिवर्तन होकर वृक्ष की उत्पत्ति करता है।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

नंद वंश

- कार्यकाल – 345 ई.पू. से 322 ई.पू. तक
- संस्थापक – महापद्मानंद (शिशुनाग वंश का अंतिम शासक महानन्दिन/नंदिवर्धन की हत्या कर)

महापद्मनंद के उपनाम

- सर्वक्षत्रो संग्राहक – क्षत्रियों को नष्ट करने वाला
- भार्गव – परशुराम का अवतार
- द्वितीय परशुराम – अपरो परशुराम भी कहते है।
- पाली ग्रंथों मे इसे उग्रसेन कहा गया है।

उपलब्धियाँ

1. कंलिग नरेश खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में वर्णन है–मगध नरेश महापद्नमनंद ने कलिंग पर आक्रमण कर कलिंग नरेश खारवेल को पराजित किया।
2. कलिंग में तंनसुलि नहर का निर्माण (नहरों का पहली बार अभीलेखीय उल्लेख)

- कलिंग से जिनसेन (जैन तीर्थकर ऋषभदेव) की मूर्ति को मगध ले गया।
- प्राचीन काल के प्रसिद्ध व्याकरणचार्य 'पाणिनी' इन्हीं के दरबार से संबंधित थे। जिनके द्वारा अष्टध्यायी ग्रंथ (व्याकरण पर आधारित) लिखी गई।

घनानंद

- नंद वंश का अंतिम शासक था।
- सिकंदर का समकालीन था।
- घनानंद की विशाल सेना से डरकर सिकंदर, व्यास नदी से वापस लौट गया। और उत्तर भारत मैदानी क्षेत्र आक्रमण से सुरक्षित हो गया।
- 322 ई.पू. में प्रधानमंत्री कौटिल्य की कूटनीति द्वारा चन्द्रगुप्त मौर्य ने घनानंद को पराजित कर मगध पर मौर्य वंश की स्थापना की।
- यूनानी ग्रंथों में घनानंद को 'अग्रमीज' कहा जाता है।
  नोट – कात्यायन, पाणिनी, पंतजलि को सम्मिलित रूप से मुनित्रय कहा जाता है।
- वररूचि, कात्यायन, विद्वान इसी के दरबार से संबंधित थे। ग्रंथ–वार्तिकाकार (नक्षत्र विद्या)
- घनानंद ने 'नंदोपक्रमणि' नामक पैमाना बनाया – दूरी मापक यंत्र था।
- जैन मतालम्बी स्थूलभद्र घनानंद के प्रधानमंत्री (अमात्य) थे।

विदेशी आक्रमण

ईरानी आक्रमण	यूनानी आक्रमण
516 ई.पू.	326 ई.पू.

- भारत पर प्रथम आक्रमण 'ईरानी' शासक साइरस द्वितीय के द्वारा किया गया किन्तु यह असफल रहा। अंततः प्रथम सफल आक्रमण 516 ई.पू. में ईरानी शासक डेरियस प्रथम द्वारा किया गया।

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

- **साक्ष्य**

  1. बेहिस्तून अभिलेख (ईरान) : भारत पर आक्रमण का उल्लेख
  2. ईरानी विद्वान हेरोडोटस की रचना 'हिस्टोरिका' में वर्णन।

  नोट – हेरोडोटस को इतिहास का पिता कहा जाता है।

- द्वारा प्रथम ने कम्बोज, गंधार व सिंध क्षेत्र को विजित किया।

ईरानी आक्रमण का भारत पर प्रभाव

प्रथम सफल आक्रमणकारी डेरियस प्रथम (दारा प्रथम) 516 ई.पू.

जानकारी : ईरारी लेखक – हेरोडोटस की पुस्तक 'हिस्टोरिका' से

1. स्थलीय मार्ग की खोज – बोलन एवं खेबर दर्रा
2. ईरान – भारत के मध्य व्यापार
2. ईरानियों की अरमाइक लिपि का भारत में प्रचार–प्रसार

} प्रभाव

खरोष्टी लिपि का निर्माण (अरमाइक+भारतीय लिपि) रूप में अनुशरण

3. मौर्य वास्तुकला में ईरानी घण्टाकार एवं गुम्बद का प्रभाव है।
4. अभिलेख उत्कीर्ण करने की प्रथा का प्रारम्भ – मौर्य सम्राट अशोक द्वारा अनुसरण
5. महिला अंगरक्षिका नियुक्ति की परंपरा शुरू

यूनानी आक्रमण

- नेतृत्वकर्ता – एलेंक्जेंडर तृतीय (सिकंदर महान)
- जन्म – 356 ई.पू. – मकदूनिया में
- पिता – फिलिप
- गुरू – अरस्तु
- 336 ई.पू. में शासक बना। ईरान के शासक दारा तृतीय को हराने के पश्चात् (सिंकदर महान) एलेक्जेंडर दी ग्रेट उपाधि।
- 326 ई.पू. में भारत पर आक्रमण किया।
- **सिकंदर के सेनापति**
  - जल सेना – नियार्कस
  - थल सेना – सेल्युकस निकेटर
- मृत्यु – 323 ई.पू. बेबीलोन (बगदाद ईराक क्षेत्र में) – टाइफाइड के कारण
- नोट – हाइडेस्पीज/वितस्ता का युद्ध के पश्चात् सिकंदर, झेलम नदी के तट पर 2 नगरों की स्थापना करता है।

  1. निकाईया
  2. बऊकेफेला (प्रिय घोडें का नाम)

प्रश्न : सिकंदर के विजय अभियानों/साम्राज्य विस्तार का वर्णन करो।

उत्तर : एलेक्जेण्डर दी ग्रेट (सिकंदर महान)

राज्यभिषेक 336 ई.पू. के पश्चात् विजय अभियान

1. अराबेला युद्ध : सिकंदर एवं डेरियस तृतीय के मध्य 'सिकंदर द्वारा एशिया माइनर (तुर्की) क्षेत्र पर अधिकार।
2. गंधार शासक आम्बी द्वारा आत्मसमर्पण (अफगानिस्तान पर अधिकार)
3. हाइडेस्पीज युद्ध (वितस्ता युद्ध) – 326 ई.पू. झेलम नदी के तट पर

राजा पोरस द्वारा सिकंदर की अधीनता स्वीकार्य – कश्मीर पर अधिकार

4. मालव गणराज्य विजित – सम्पूर्ण कश्मीर पर अधिकार
5. मस्सग गणराजय विजित – पंजाब क्षेत्र पर अधिकार

नोट : इस युद्ध में पुरूषों की मृत्यु पश्चात् महिलाओं द्वारा नेतृत्व।

6. पाटल अभियान – अंतिम युद्ध (व्यास नदी उत्तर–पश्चिम क्षेत्र विजित)

- उपरोक्त समस्त युद्ध विजित करने के कारण ही सिकंदर को 'विश्व विजेता' की उपाधि दी गई।

नोट : मगध अधिपति नंद वंश शासक घनानंद की सेना से भयभीत होकर सिकंदर की सेना ने व्यास नदी पार करने से इंकार कर दिया।

प्रश्न : भारत पर सिकंदर की सफल आक्रमण के कारण

- यूनानी शासक
- 326 ई.पू. भारत पर आक्रमण
- उपाधि – एलेक्जेण्डर दी ग्रेट

भारत पर सफल आक्रमण कारण

1. भारत में केन्द्रीय शक्ति का अभाव
2. देशद्रोही शासक आम्बी द्वारा सहयोग
3. कुशल सेन्य नेतृत्व :
   थलसेना प्रमुख – सेल्युकस निकेटर
   जलसेना प्रमुख – निर्याकस
4. सिकंदर स्वंय कुशल सेनापति एवं दूरदर्शी, महत्वकांक्षी।
5. पश्चिमोउत्तर शासकों की शक्तिहीनता – मस्सग गणराज्य में महिलाओ ने युद्ध किया।
6. सिकंदर की पूर्व विजय – अराबेला युद्ध द्वारा सैनिकों में आत्मविश्वास।

प्रश्न : यूनानी आक्रमण का भारत पर प्रभाव

- यूनानी आक्रमण (326 ई.पू.)
- आक्रमणकर्ता – सिकंदर (अलेक्जेण्डर द ग्रेट)

1. व्यापारिक मार्गों की खोज

स्थलीय : खेबर दर्रा + जलीय – मकरान तट

2. गंधार शैली (यूनानी–भारतीय कला) का विकास
3. पश्चिमोउत्तर भारत के छोटे–छोटे राज्यों का पतन – मगध में मौर्य सम्राज्य के एकीकरण
4. ज्योतिष विद्या–यूनान की देन
5. क्षत्रप प्रणाली की शुरूआत
6. मुद्रा– उलूक शैली के सिक्के प्रचलन
7. सोने के सिक्के प्रचलन

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

मौर्य वंश

- चन्द्रगुप्त मौर्य : 322 ई.पू. से 238 ई.पू तक
- जानकारी स्त्रोत : 1. कोटिल्य रचित – अर्थशास्त्र
  2. मेगस्थनीज ग्रंथ – इण्डिका
- प्रधानमंत्री एंव पुरोहित – कौटिल्य

उपलब्धियां :

1. मगध साम्राज्य पर अधिकार 322 ई.पू. नंद वश शासक घनानंद को पराजित किया
2. साम्राज्य विस्तार – 305 ई.पू. यूनानी शासक सेल्युकस निकेटर को पराजित किया । सेल्युकस निकेटर द्वारा 4 क्षेत्र चन्द्रगुप्त मौर्य को सौंप दिये।

   एरिया – हेरात
   अराकोसिया – कंधार
   पेरोपनिसदाई – काबुल
   जेड्रोसिया – मकरान तट

नोट – सेल्युकस की पुत्री हेलना से विवाह दहेज में 500 हाथी प्राप्त

3. 317 ई.पू. – पंजाब विजय

यूनानी सेनापति 'यूथीडेमस' को पराजित कर

चन्द्रगुप्त मौर्य साम्राज्य

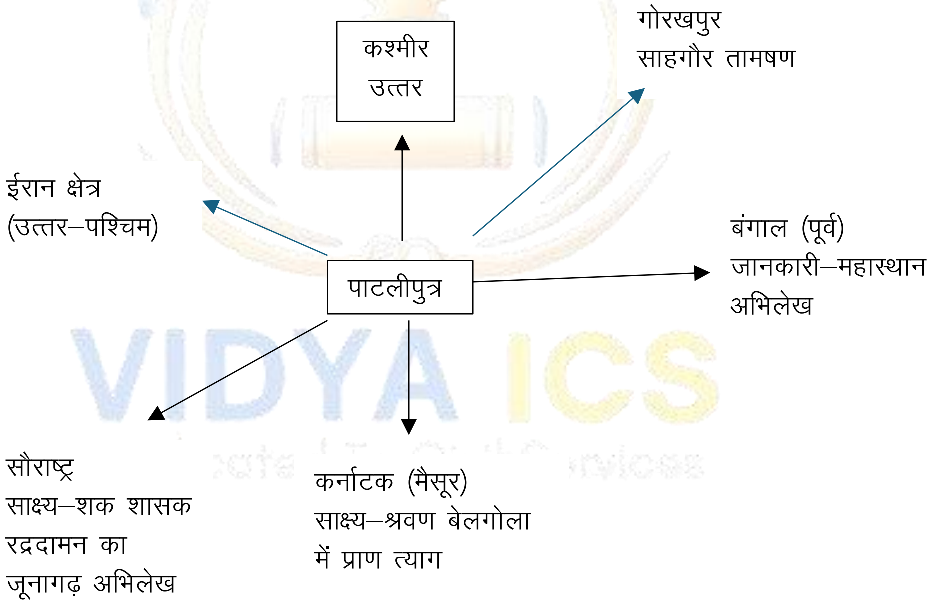

4. सुदर्शन झील का निर्माण – प्रांतीय राज्यपाल 'पुष्पगुप्त' को निर्देश।

नोट : जैन ग्रंथों में चन्द्रगुप्त मौर्य को विशाखाचार्य कहा गया है।
 जस्टिन ने चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना को 'डाकूओं का गिरोह' कहा।
 चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना उत्तराधिकारी 'सिंहसेन' अर्थात् बिन्दुसार को नियुक्त किया।

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

बिन्दुसार

- कार्यकाल – 298 ई.पू. से 273 ई.पू. तक
- जैन ग्रंथ – सिंहसेन
- युनानी ग्रंथ – अमित्रचेट्ज
- संस्कृत ग्रंथ – अमित्रघात
- बिन्दुसार अजीवक संप्रदाय के अनुयायी – राजदरबार में आजीवक धर्म प्रमुख पिंगलवत्स रहते थे।

प्रमुख विद्रोह

- सुशीम के विरूद्ध विद्रोह प्रथम बार विद्रोह अशोक ने दबाया।
  दूसरी बार स्वंय सुशीम ने दबाया।
- उज्जेयनी विद्रोह : अशोक के विरूद्ध विद्रोह। स्वंय अशोक ने दबाया।
- नेपाल विद्रोह : अशोक द्वारा दबाया।
- शासक एण्टीयोकस द्वारा डायमेकस राजदूत को बिन्दुसार के दरबार में भेजा गया।
- मिस्त्र के राजा टाल्मी द्वितीय ने डायनोसियस को बिन्दुसार के दरबार में भेजा।
- बिन्दुसार उत्तराधिकारी – सुशीम

अशोक

- कार्यकाल – 269 ई.पू. से 232 ई.पू तक
- अभिलेखों में देवानप्रियदर्शी उपाधि।
  पुराणों – अशोक वर्धन
  पिता – बिन्दुसार
  माता – धम्मा (सुभद्रांगी)
  पत्नी – असंधिमित्रा, महादेवी (विदिशा के व्यापारी की पुत्री) – पद्मावती–कुणाल की माँ।
  पुत्री – संघमित्रा (महादेवी की पुत्री)
  पुत्र – कुणाल, तीवर, जालोक, महेन्द्र
- जालोक को कश्मीर का राज्यपाल बनाया।

प्रश्न – अशोक एक जनकल्याणकारी शासक

- अशोक : 273 ई.पू.–232 ई.पू.
- मौर्य वंश शासक बिन्दुसार का उत्तराधिकारी
- 261 ई.पू. – कलिंग युद्ध की वीभत्स घटना के पश्चात् अशोक का ह्रदय परिवर्तन : युद्ध नीति त्याग कर लोक–कल्याणकारी कार्यों के प्रति समर्पण
- जानकारी – अशोक के अभिलेख

क) लोक कल्याण कारी कार्य

1. प्रथम शिलालेख : सभी प्रजा मेरी संतान है, जिस प्रकार
   पितृत्व राजतंत्र सिद्धांत का प्रतिपादन :
2. 5 वें शिलालेख–अपने जन्म दिवस वृद्ध एवं निराश्रित बंदियों को मुक्त
3. 2वें शिलालेख–पशु चिकित्सालय एवं मानव चिकित्सालय की स्थापना
4. 6वें शिलालेख–आम जनता किसी भी समय सम्राट अशोक से मिल सकती है।

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

5. 10वें शिलालेख–पदाधिकारी हमेशा प्रजाहित में सोंचें।
6. साम्राज्य के प्रत्येक रास्ते पर राहगीरों हेतु वृक्ष, कुऐं, विश्रामगृह की व्यवस्था हर आधे कोस पर।
7. बराबर पहाड़ी पर आजीवक से प्रदाय हेतु चार गुफाओं का निर्माण–सुदामा,विश्वझोपड़ी, कर्ण, चौपाट।
8. रूम्मिदेई स्तम्ब लेख– लुम्बिनी की यात्रा के दौरान कर की दर में कमी 1/6–1/10
9. तक्षशिला, विश्वविद्यालय हेतु दान।

ख) धम्म नीति – प्रजा के नैतिक आचरण नियमों की संहिता।

1. 7वें शिलालेख–धर्म गुणों की व्यवस्था
   धार्मिक सहिष्णुता की चर्चा।
   दया, दान, पवित्रता, उदारता
2. 3वें शिलालेख – रज्जुकों की नियुक्ति।
   प्रत्येक 5वें वर्ष धम्म के प्रचार–प्रसार हेतु
3. 4वें शिलालेख – युद्ध नीति को त्याग का धम्म नीति अनुसरण।
4. 5वें शिलालेख – धम्म महामंत्रियों की नियुक्ति।

ग) धार्मिक नीति

- अशोक स्वंय की धार्मिक सहिष्णुता एवं सर्वधर्म स्वभाव का अनुशरण करते थे।
- विभिन्न धर्मा के प्रति व्यक्तिगत आस्था।
- हिन्दु धर्म के प्रति आस्था :–

1. अभिलेखों में देवान प्रियदर्शी की उपाधि।
2. कश्मीर में श्रीनगर की स्थापना, शैव मंदिर का निर्माण।
3. आजीवक संम्प्रदाय हेतु–बराबर की पहाड़ी पर–विश्व झोपड़ी, सुदामा , कर्ण, चौपार गुफा का निर्माण।

- **बौद्ध धर्म के प्रति आस्था**

1. बौद्ध स्तूप का निर्माण – सांची सारनाथ
2. महात्मा बुद्ध जीवन संबंधित क्षेत्र यात्रा
   राज्यरोहण के 10वें वर्ष–गया।
   20वें वर्ष – लुम्बिनी यात्रा।
3. तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन (251 ई.)
4. पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु श्रीलंका भेजा।

मौर्योत्तर काल

विदेशी राज्य
इण्डोग्रीक
शक
पह्लव
कुषाण

देशी राज्य
शुग → कण्व
↓
सातवाहन

हिन्द–भवन (इण्डोग्रीक)

यूक्रेटाइडीज वंश
शासक एटीयालकीड्ज
राजधानी–तक्षशिला
राजदूत – हेलियोडोरस
↓
शुंग वंश शासक
भागभद्र के दरबार में पहुंचा
'पेरीप्लस ऑफ द शिग्रियन सी' में उल्लेख – मिनाण्डर के सिक्के
भड़ोच (गुजरात) बालाघाट (म.प्र.) से प्राप्त हुये।
स्ट्रोटो द्वितीय ने शीशें के सिक्के चलवाये।

यूथीडेमस/डेमोट्रियस शासक
राजधानी–शाकल(शियालकोट)–शिक्षा केन्द्र
शासक – मिनाण्डर(मिलन्द) 'मिलन्द पन्हों'
बौद्ध भिक्षु नागसेन से वार्तालाप की चर्चा।

शक वंश

प्रारंभ में अरल सागर क्षेत्र निवासी किन्तु यूची कबीले (कुषाण) के आक्रमण पश्चात् भागकर भारत आये।
5 शाखाओं में बंट गए।

1. अफगानिस्तान
2. तक्षशिला
3. मथुरा

} उत्तरी क्षत्रप

4. मालवा
5. नासिक

} दक्षिणी क्षत्रप

मथुरा में हगामन वंश का शासन था जिसकी एक शाखा मालवा तक विस्तारित थी किन्तु मालवा शासक विक्रमजीत द्वारा 57 ई.पू. में शकों को पराजित कर मालवा से निष्कासित कर दिया।

नोट–शकों पर विजय के उपलक्ष्य में विक्रमजीत द्वारा 57 ई.पू. में विक्रम संवत् की स्थापना की।

➢ नासिक क्षत्रप (चस्टन वंश)
राजधानी – मिननगर (नासिक महाराष्ट क्षेत्र)
नोट : पेरिव्यास ऑफ दी एरिथ्रीन सी में राजधानी का उल्लेख।

मालवा क्षत्रप–कार्दमक वंश

प्रसिद्ध शासक –रूद्रदामन

उपलब्धियाँ

1. विक्रमजीत के मृत्यु पश्चात पुनः मालवा पर अधिकार।
2. सातवाहन शासक वशिष्टीपुत्र पुलमावी को 2 बार पराजित किया।
3. सौराष्ट्र क्षेत्र में सुदर्शन झील का पुर्ननिर्माण।
4. क्षत्रप प्रणाली के तहत मालवा क्षेत्र के छोटे–छोटे राज्यों को अपने अधीन बनाया।
5. जूनागढ़ अभिलेख–संस्कृत भाषा एवं ब्राह्मी लिपि का सबसे बड़ा अभिलेख।
6. हरियाणा के यौधेय जनजाति के शासकों को पराजित किया।

पह्लव वंश

राजधानी – तक्षशिला

संस्थापक – मिथेडेट्स (भारत में)

मूल निवासी – ईरान

शकों के पश्चात –पश्चिमोत्तर भारत पर अधिपत्य

महत्वपूर्ण शासक : गोन्दोफर्नीज

जानकारी – पेशावर में स्थिप तख्तेवही अभिलेख

गोन्दोफर्नीज के शासनकाल में ईसाई धर्म के प्रथम प्रचारक – सेन्ट थॉमस की भारत यात्रा

↓

तमिलनाडु में हत्या

नोट : पह्लव वंश का अंत कुषाणों द्वारा।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

कुषाण वंश – यूची वंश

मूल निवासी – अमु दरीया सिर दरीया (अरल सागर क्षेत्र)

शकों को पराजित कर अरल सागर क्षेत्र पर अधिकार

यूची वंश

कनिष्ठ यूची

तिब्बत क्षेत्र (अधिकार)

ज्येष्ठ यूची

भारत की ओर पलायन (पार्थियन वंश का अंत)

प्रमुख शासकः कुजुल कड फिसेस

1. कुषाण वंश संस्थापक
2. हिन्दुकश पर्वत क्षेत्र पर अधिकार
3. बौद्ध धर्म के प्रति आस्था

धर्म विदष नामक उल्लेखित सिक्के।

तांबे के सिक्के चलवाये।

विमकडफिससे

1. पंजाब क्षेत्र पर अधिकार
2. चीनी ग्रंथ – हाउ–हान–शु में वर्णन
3. कुषाण वंश – वास्तविक संस्थापक
4. पेशावर को राजधानी बनाया।
5. महेश्वर उपाधि धारण की।
6. नियमित रूप से सोने के सिक्के जारी।
7. यूनानी खरोष्टी लिपि सिक्कों पर शिव नदी त्रिसूल अंकन

कुषाव वंश अन्य शासक

1. वशिष्क – मथुरा को प्रथम राजधानी बनाया।
2. हुविष्क – कश्मीर में हुविष्क नगर की स्थापना।, वैष्णव धर्म के अनुयायी।
3. कनिष्क द्वितीय – केशर, सीजर उपाधि।
4. वासुदेव द्वितीय – अंतिम सम्राट

VIDYA ICS Dedicated To Civil Services

VIDYA ICS
We Nurture Dreams...

प्रश्न : मथुरा कला एवं गंधार कला में अंतर बताओ।

आधार	गांधार कला	मथुरा कला
उत्पत्ति	हिन्द–भवन (इन्डो–ग्रीक)	कुषाण →कनिष्क
स्थान	गांधार, तक्षशिला	भारत–मथुरा , पाटलिपुत्र
पत्थर प्रयोग	काले स्लेटी	लाल–बलुआ पत्थर
मूर्ति प्रकृति	यर्थाथवादी अपोलो देवता के समान आभा मण्डल दाड़ी, मूँछ, पतले कपड़े	आदर्शवादी आध्यात्मिक रूप आभा मण्डल नहीं मोटे कपड़े पहने हुये
विशिष्ट मुद्रा	महात्मा बुद्ध →धर्मचक्रप्रवर्तन भू–स्पर्श मुद्रा	महात्मा बुद्ध अमयमुद्रा , ध्यान मुद्रा

<u>कनिष्क</u>

कुषाण वंश महान शासक था।

उपाधि – देवपुत्र

उपलब्धियां :

1. शक संवत् 78 ई.पू. की शुरूआत (राज्यरोहण के उपलक्ष्य में)
2. साम्राज्य विस्तार

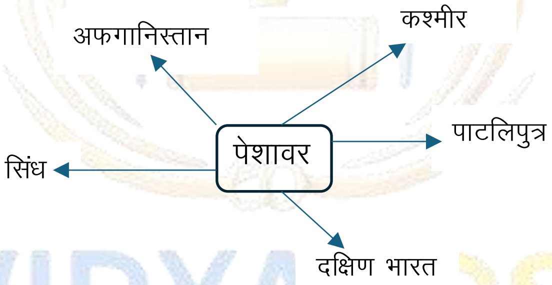

3. जानकारी :
   रबतब अभिलेख–अफगानिस्तान विजय जानकारी
   सुई विहार अभिलेख–सिंध विजय
4. राजधानी (2)
   प्रथम राजधानी – पेशावर
   द्वितीय राजधानी – मथुरा
5. स्थापत्य निर्माण :
   1. संघाराम स्तूप (पेशावर)
   2. कश्मीर–कनिष्कपुर नगर
   3. दवकुल नगर (मथुरा)
   4. 13 मंजिल टॉवर (पेशावर)
   5. सिरकप नगर (तक्षशिला)

Add. : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P.474002
Cont. No.9425404428, 9425744877

चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन

काल – प्रथम शताब्दी

स्थान – कुण्डलवन (कश्मीर)

अध्यक्ष – बसुमित्र,

उपाध्यक्ष – अश्वघोष

विशेष – बौद्ध संप्रदाय दो भागों में विभाजित हुई – 1. हीनयान 2. महायान

नोट – 1. बौद्ध धर्म की महायान शाखा का अनुयायी।

2. बौद्ध धर्म विशेष कार्य करने के कारण – द्वितीय अशोक की संज्ञाऐं।

अंतर्राष्ट्रीय रेशम मार्ग पर अधिकार : 3 मार्ग (2 स्थलीय व 1 जलीय)

1. रोम – भारत – चीन – स्थलीय
2. रोम – लाल सागर – मकरान तट (करांची)
3. रोम – काला सागर – दजला फरात नदी (अफगानिस्तान)

मूर्तिकला विकास

गंधार कला, मथुरा कला, शैली विकास

नोट : मथुरा में रोमन वस्त्र पहने हुये (रोगी, चोगा, जूते) स्वंय की मूर्ति स्थापित।

विद्वान संरक्षक

अश्वघोष – राजकवि (रचनाऐं–बुद्धचरित्र)

चरक – चिकित्सक (रचना–चरक संहिता)

नागार्जुन –वैज्ञानिक (रचना–माध्यामिका सूत्र)

वसुमित्र – बौद्ध भिक्षुक (पुरोहित)

तांबें एवं शुद्ध सोने के सिक्के चलवाये।

नोट–तांबे के सिक्कों पर अग्नि बैदिका पर बलि चढ़ाते हुये अंकन।

सोने के सिक्कों पर महात्मा बुद्ध की प्रतिमा अंकित।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

स्थानेश्वर का पुष्यभूति वंश

- गुप्त राजाओं की दुर्बलता का लाभ उठाकर उसने पूर्वी पंजाब (हरियाणा) में अपनी सत्ता स्थापित की।
- राजधानी – थानेश्वर

प्रभाकर वर्द्धन

- वर्धन वंश की शक्ति व प्रतिष्ठा का संस्थापक
  उपाधि
- हूण हरिण केसरी (हूण रूपी हरिन के लिये समान)
- अपनी स्थिति को सुद्रढ़ करने के लिये प्रभाकर वर्द्धन ने मौखरियों से वैवाहिक संबंध स्थापित किया। पुत्री राज्य श्री का विवाह ग्रहवर्मा से करा दिया।

राज्यवर्द्धन द्वितीय

- प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु के पश्चात् यह गद्दी पर बैठा।
- उसी समय इसे समाचार मिला कि बंगाल के शासक 'शशांक' तथा मालवा के राजा 'देवगुप्त' ने मिलकर कन्नौज पर आक्रमण कर दिया। तथा राज्य श्री को कैद में करके ग्रहवम्र की हत्या कर दी। राज्यवर्द्धन तुरन्त अपनी सेना लेकर अपनी बहन राज्य श्री को आजाद कराने के लिये निकल पड़ा। उसने देवगुप्त की सेना को पराजित करके देवगुप्त की हत्या कर दिया। परन्तु धोखे से बंगाल शासक शंशाक ने राज्यवर्द्धन की हत्या कर दी।

हर्षवर्धन (भारत का अंतिम हिन्दु सम्राट)

- राजा बनते ही उसने शंशाक से बदला लेने की प्रतिज्ञा की तथा अपनी बहन राज्यश्री की सुरक्षा के लिये कन्नौज की ओर बढ़ा।
- हर्षवर्धन की सेना बड़ी तथा शक्तिशाली थी । मार्ग में ही उसे कई राजा मिले और मित्रता का प्रस्ताव रखा। अतः हर्ष ने स्वीकार किया। अंततः शशांक की हत्या कर दी।
- आगे बढ़ने पर उसे सूचना मिली कि राज्यश्री कैद से मुक्त होकर विन्ध्याचल चली गई। राज्यश्री को हर्ष ने आचार्य दिवाकर मित्र की सहायता से दूढ़ लिया।
- अपनी बहन को समझा–बुझाकर घर ले गया। इधर मौसरि शासक ग्रहवर्मा की हत्या हो जाने की वजह से कन्नौज की गद्दी खाली थी।
- अतः सभी की सहमति से कन्नौज को भी राज्य में मिला लिया गया। इस प्रकार से हर्षवर्धन ने अपनी थानेश्वर से स्थानांरित कर कन्नौज को बनाया।

साहित्य

हर्षचरित्र → बाणभट्ट (दरबारी कवि द्वारा रचित)
↓
हर्षवर्द्धन का जीवन चरित्र

कादम्बरी → बाणभट्ट संस्कृत साहित्य का श्रेष्ठ उपन्यास ।

हर्ष सामाजिक व धार्मिक स्थिति का ज्ञान।

हर्ष द्वारा लिखे गये ग्रंथ – प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानन्दा।

- इसके दरबार में मयूर नामक विद्वान था जिसने कुष्ठ रोग ठीक करने के लिये सूर्य की उपासना की। मयूरशतक/सूर्यसतक
- हर्ष के दरबार में हरिदत्त और जयसेन जैसे प्रसिद्ध विद्वान थे।

ह्रेनसांग

- कार्यकाल : 629 से 645 तक
- 7वीं शताब्दी में भारत आया तथा लगभग 16 वर्षों तक रहा। उसने अपने यात्रा संस्मरण को 'सी–यू–की' नाम से संकलित किया।
- उपाधि :
- शाक्यमुनि, यात्रियों का राजकुमार ।
  1. हर्ष को' 'वैश्य जाति का बताया है। हर्ष को शिलादित्य की उपाधि भी दी।
  2. उसने शुद्रों को कृषक कहा है।
  3. उसके समय में नालन्दा के प्राचार्य शीलभद्र थे।
  4. सिंचाई घटी यंत्र (रहट) द्वारा होती थी।
  5. भारत के घोड़े अरब, ईरान व कम्बोज से आते थे।
  6. ह्वेनसांग ने कन्नौज की धर्मसभा एवं प्रयाग की महामोक्ष परिषद का वर्णन किया।
- हर्षवर्द्धन का कोई भी पुत्र नहीं था, सिर्फ उसकी पुत्री थी। जिसका विवाह उसने बल्लभी के ध्रुवसेन द्वितीय के साथ किया।
- प्रयाग की महामोक्ष परिषद : हर्ष प्रत्येक पांचवे वर्ष दान करने के लिये एक बड़ी सभा बुलाता।

चोल साम्राज्य

चोल पल्लवों के सामंत थे

जानकारी – अभिलेखों द्वारा उत्तरमेरूर

विस्तार – कोरोमण्डल तट, दक्कन के कुछ भाग – उरैयूर, कावेरी पद्धनम, तंजावूर क्षेत्र बन्दरगाह, पेन्नार एवं कावेरी नदियों के मध्यक्षेत्र शासक

विजयालय – चोल साम्राज्य का संस्थापक पल्लवों के सामांत था।

तंजोर पर अधिकार किया।, नरकेशरी की उपाधि।

परातंक प्रथम : चोल नरेश विजयालय का उत्तराधिकारी

दो प्रमुख युद्ध लड़े।

बैल्लुर युद्ध विजय – पाडंय नरेश राजा सिंह द्वितीय, सिंहल राजा की संयुक्त सेना

उपाधि – मदुरे कोण्ड

तक्कोलम युद्ध में पराजित – राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण तृतीय द्वारा।

संक्षिप्त टिप्पड़ी

राजराजा प्रथम : 985–1014

चोल शासक परातंक प्रथम उत्तराधिकारी

उपलब्धियां : 1. साम्राज्य विस्तार 2. सांस्कृतिक कार्य

साम्रज्य विस्तार :

1. सर्वप्रथम श्रीलंका (सिंहल) विजय करने वाला भारतीय शासक सिंहल (श्रीलंका) नरेश महेन्द्र पंचम को पराजित किया। मालद्वीव विजय : शक्तिशाली नौ सैना की स्थापना द्वारा।

सांस्कृति उपलब्धियां

1. सिंहल विजय पश्चात वहां– मुम्डि चोलमण्डलम् की स्थापना
   उपाधि धारण – मुम्माडिचोल देव
2. शैव मतानुयायी – तंजौर में बृहदेश्वर मंदिर निर्माण
   अन्य नाम – राजराजेश्वर या राजराज मंदिर

राजेन्द्र चोल पर संक्षिप्त टिप्पड़ी लिखो।

राजेन्द्र चोल – चोल वंश का शासक

राजराजा प्रथम उत्तराधिकारी

साम्राज्य विस्तार

बंगाल अभियान 1022 ई.–पाल शासक महिपाल पराजित

दक्षिण–पूर्व एशिया सैन्य अभियान–द्वीप विजित, मलय प्रायद्वीप, जावा, सुमात्रा, इण्डोनेशिया।

सांस्कृति कार्य

- बंगाल में गंगेकोंड चोलपुरम नामक राजधानी निर्माण
  उपाधि–गंगैकोंडचोल

- राजेन्द्र प्रथम स्वंय विद्वान था।
- वैदिक शिक्षा हेतु शिक्षा संस्थानों की स्थापना ।
- शिक्षा के लिये भूमि अनुदानों की शुरूआत।
- उपाधि – पंडित चोल

राजाधिराज प्रथम

यह चोल नरेश था।
राजेन्द्र प्रथम का प्रथम उत्तराधिकारी
युद्ध विजय : कोप्पम युद्ध चालुक्य नरेश 'सोमेश्वर' को पराजित किया।
सामेश्वर प्रथम द्वारा तुंगभ्रदा नदी में कूदकर आत्महत्या।

कुलोतुंग प्रथम – चोल चालुक्य रक्त मिश्रित द्वितीय चोल वंश संस्थापक (चोल चालुक्य वंश)
द्वितीय चोल वंश संस्थापक (चोल–चालुक्य वंश)
पिता : चालुक्य वंश शासक
माता : चोल राजकुमारी थी।
चीनी ऐतिहासिक स्त्रोतों के अनुसार 1077 ई में कुलोतुंग प्रथम ने चीनी सम्राट के समक्ष 72 व्यक्तियों का दूत मण्डल भेजा।
व्यापारिक शिष्ट मण्डल–तमिल व्यापार हेतु चीन से व्यापारिक सुविधाऐं प्राप्त करनी थी।

कुलोतुंग द्वितीय

चोल–चालुक्य वंश शासक
कुलोतुंग प्रथम उत्तराधिकारी
चिदम्बरम स्थित 'नटराज' मंदिर का पुरूउद्धार कराया।
मंदिर के प्रागंण से गोंविदराज की प्रतिमा को हटाकर समुद्र में फिकवा दी।

राजेन्द्र तृतीय : चोल वंश का अंतिम शासक

वाकाट्य वंश

पुराणों के अनुसार विंध्यशक्ति – वाकाट्य वंश का संस्थापक था।
राजधानी – विदर्भ/ बरार

1. **विंध्य शक्ति** – संस्थापक
2. प्रवरसेन प्रथम – महाराजा, सम्राट की उपाधि धारण
   2 अश्वमेघ यज्ञ एवं 1 वाजपेय यज्ञ किया।
3. **रूद्रसेन प्रथम**

गुप्त शासक समुद्र गुप्त समकालीन था।

4. **रूद्रसेन द्वितीय**

गुप्त शासक चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की पुत्री प्रमावती गुप्त से विवाह हुआ।
पत्नी के प्रभाव में आकर बौद्ध धर्म त्याग कर वैष्णव धर्म ग्रहण।

5. **प्रवरसेन द्वितीय**
मूल नाम – दादोदर सैन
प्रमावती गुप्त का पुत्र
साहित्य एवं कला में विशेष रूचि
'सेतुबन्ध नामक काव्य की रचना की।

6. **प्रथ्वीसेन द्वितीय** : वाकाटय वंश का अंतिम शासक

दक्षिण के राज वंश

1. पल्लव वंश

साम्राज्य क्षेत्र – उत्तरी तमिलनाडु
राजधानी – कांची
महत्वपूर्ण शासक

1. सिंह विष्णु – संस्थापक
उपाधि – अवनि सिंह
वैष्णव धर्म मतानुयायी
सिंह विष्णु के राजदरवार में संस्कृत के महाकवि भारवि निवास करते।

2. महेन्द्र वर्मन :
उपाधि –' मत्त विलास
इसी के द्वारा मत विलास प्रहसन नामक हास्य ग्रंथ लिखा गया।

3. नरसिंह वर्मन प्रथम :
उपाधि – मामल्ल
चालुक्य शासक पुलेकेशिन द्वितीय को पराजित किया।
इस धर्म को समर्पित महाबलि पुरम के रथ मंदिरों का निर्माण करवाया।

4. नरसिंह वर्मन द्वितीय :
उपाधि – राज सिंह, शंकर भक्त
शैव धर्म को समर्पित कांची के कैलाश मंदिर का निर्माण किया।

<u>बादामी/वातापी के चालुक्य</u>

1. पुलकेशिन प्रथम
संस्थापक –पुलेकिशन प्रथम
उपाधि – श्री प्रथ्वी वल्लभ

2. मंगलेश

बादामी में गुहा मंदिर का निर्माण पूरा करवाया।
कदम्ब शासकों का उन्मूलन किया।
उपाधि – सत्याश्रय श्री प्रथ्वी बल्लभ महाराज

3. पुलकेशिन द्वितीय

नर्मदा नदी के तट पर हुये युद्ध में कन्नौज शासक हर्षवर्धन को पराजित किया।
पुलकेशिन द्वितीय के विजय अभियानों का उल्लेख दरबारी कवि 'रविकीर्ति' के ''एहोल प्रशस्ति लेख'' में वर्णित है।

4. विजयालित्य

इसका शासन काल सबसे लंबा था।
इसके काल में पट्ठकल में शैव मंदिर का निर्माण करवाया।

5. कीर्तिवर्मन द्वितीय

चालुक – पल्लव संघर्ष के कारण इसके सामंत दंतिदुर्ग ने चालुक्य के उत्तरी भाग में अधिकार कर लिया।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

गुप्त वंश
गुप्त साम्राज्य : जानकारी स्त्रोत

संस्थापक – श्रीगुप्त

प्रमुख शासक – चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त विक्रमादित्य

जानकारी स्त्रोत :

1. साहित्य
2. पुरातात्विक
3. स्थापत्य साक्ष्य
4. विदेशी यात्री विवरण

विशाखदत्त→ देवीचन्द्र गुप्तम ग्रंथ → चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य वर्णन

साहित्यक–कालिदास
- अभिज्ञान शकुंतलम
- ऋतु संहार

शुद्रक → मृच्छकटिकम्

पुरातात्विक :

1. दरबारी कवि – हरिषेण–प्रयाग प्रशक्ति अभिलेख
   समुद्रगुप्त विजयी अभियानों का वर्णन
2. स्कंदगुप्त – भीतरी स्तम्भ लेख
3. कुमारगुप्त – नालंदा विश्वविद्यालय का निर्माण
4. अजंता – बाघ की गुफाऐं (धार)–16, 17, 19 गुप्तकालीन गुफा
   खोज – डेंजर फील्ड
5. गुप्तकालीन सिक्के – बयाना (राजस्थान)

विदेशी यात्री विवरण

फाह्यान – चन्द्रगुप्त द्वितीय के दराबार में

ह्वेनसांग – नालंदा विश्वविद्यालय निर्माण–कुमारगुप्त वर्णन

गुप्तकालीन मंदिर निर्माण द्वारा जानकारी

तिगवा विष्णु मंदिर (जबलपुर)	भूमरा शिव मंदिर (सतना)	दशावतार मंदिर (देवगढ़)	नवनाकुठार पार्वती मंदिर (पन्ना)

श्रीगुप्त :

- गुप्त वंश के संस्थापक
- महाराज सामंत उपाधि धारण
- मंदिर निर्माण (मगध) हेतु 24 ग्राम दान

प्रश्न–चन्द्रगुप्त प्रथम पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखो।
चन्द्रगुप्त प्रथम–गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक
उपलब्धि :
1. गुप्त संवत – राज्याभिषेक तिथि पर 315 ई.
2. साम्राज्य विस्तार – युद्ध निति द्वारा, वैवाहिक संबंध द्वारा
अ) युद्धनीति : मगध के आस–पास के राज्यों को विजित कर इलाहाबाद (प्रयागराज) तक विस्तार
ब) वैवाहिक संबंध : लच्छिवी राजकुमारी 'कुमारदेवी' से विवाह → वैशाली राज्य प्राप्त
3. सामंत उपाधि (महाराज सामंत) त्याग स्वतंत्र शासक घोषित , महाराजाधिराज उपाधि धारण की।
4. गुप्त वंश में सर्वप्रथम रजत मुद्राऐं प्रचलन
5. स्वर्ण सिक्कों पर कुमारदेवी नाम अंकन, प्रगतिशील सोच (महिला समानता के पक्षधार)

समुद्रगुप्त :
चन्द्रगुप्त प्रथम उत्तराधिकारी
इसने उत्तर भारत के 9 राज्यों को विजित किया एवं दक्षिण भारत के 12 राज्यों को विजित किया।
जानकारी–दरबारी कवि हरिषेण के प्रयाग प्रसस्ति लेख द्वारा।
इसे भारत के नेपोलियन की संज्ञा दी गई है।

प्रश्न–चन्द्रगुप्त द्वितीय पर टिप्पणी लिखो – 100 शब्द
गुप्त वंश शासक
उपाधि – विक्रमादित्य, परमभागवत, शकारि
उपलब्ध्यिाँ :
1. साम्राज्य सुरक्षा–रानी ध्रुवदेवी की रक्षा।
जानकारी – विशाखादत्त कृत – देवीचंद्रगुप्तम
2. साम्राज्य विस्तार – वैवाहिक संबंध नीति, प्रत्यक्ष युद्ध नीति

वैवाहिक संबंध
अ) नाग राजकुमारी कुबेरनागा
नाग वंश – सकारात्मक संबंध
ब) पुत्री प्रभावती विवाह – वाकट्य वंश रूद्रसेन तृतीय के साथ।
स) कुन्तल राज्य (कर्नाटक) – कंदव राजकुमारी से विवाह

युद्ध नीति
वाकट्य शासक रूद्रसेन तृतीय की मदद से शकों का उन्मूलन।
पश्चिमी मालवा वर सम्पूर्ण अधिकार
उज्जैयनी को राजधानी मनाया।
3. विद्वानों का संरक्षण – नौरत्न दरबार
प्रमुख – कालीदास, धनवंतरी, वराहमिहिर
4. विदेशी विद्वान फाह्यान को दरबार में सम्मान
5. स्थापत्य काल

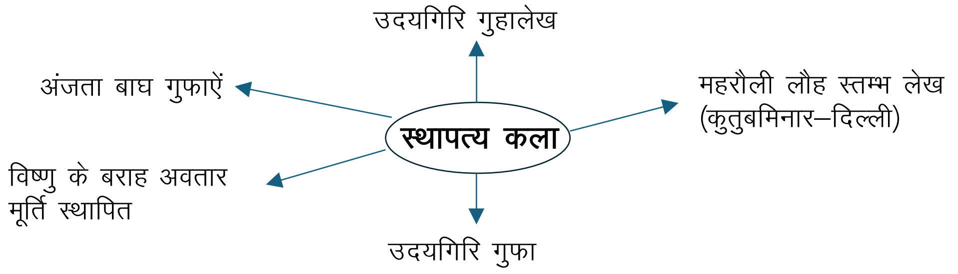

प्रश्न–चन्द्रगुप्त द्वितीय के नौ रत्न
चन्द्रगुप्त द्वितीय–गुप्त वंश शासक (375–415 ई.)
उपाधि – विक्रमादित्य, शकारि
नौरत्न – निन्मलिखित है।

रत्न	**क्षेत्र**	**रचनाऐं**
1. कालिदास	नाटक एवं काव्य	अभिज्ञान शाकुंतलम, मेघदूतम
2. धनवंतरी	चिकित्सा	आयुर्वेद
3. वराहमिहिर	खगोल विज्ञान	बृहदसंहिता
4. वरूचि	व्याकरण	संस्कृत व्याकारण
5. बेतालभट्ट	जादूगर, मंत्र	विक्रम–बेताल
6. अमर सिंह	शष्दकोष	अमरकोष शब्दावली
7. क्षपणक	ज्योतिष विद्या	ज्योतिष शास्त्र
8. शंकु	वास्तुकला	शिल्प शास्त्र
9. घटकर्पर	कवि	घटकर्पर विवृति

कुमारगुप्त :
- गुप्त वंश संस्थापक
- चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का पुत्र
- नालंदा विश्वविद्यालय का निर्माण
- मंदसौर अभिलेख का वर्णन

स्कंदगुप्त
- गुप्त वंश का संस्थापक
- कुमारगुप्त का उत्तराधिकारी
- सुदर्शन झील का पुनिर्माण
- हूणों को पराजित (साक्ष्य–भीतरी स्तम्भ लेख)

नोट–गुप्त वंश का अंतिम सम्राट विष्णु गुप्त है।

स्थानेश्वर का पुष्यभूति वंश

- गुप्त राजाओं की दुर्बलता का लाभ उठाकर उसने पूर्वी पंजाब (हरियाणा) में अपनी सत्ता स्थापित की।
- राजधानी – थानेश्वर

प्रभाकर वर्द्धन

- वर्धन वंश की शक्ति व प्रतिष्ठा का संस्थापक
  उपाधि
- हूण हरिण केसरी (हूण रूपी हरिन के लिये समान)
- अपनी स्थिति को सुद्रढ़ करने के लिये प्रभाकर वर्द्धन ने मौखरियों से वैवाहिक संबंध स्थापित किया। पुत्री राज्य श्री का विवाह ग्रहवर्मा से करा दिया।

राज्यवर्द्धन द्वितीय

- प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु के पश्चात् यह गद्दी पर बैठा।
- उसी समय इसे समाचार मिला कि बंगाल के शासक 'शशांक' तथा मालवा के राजा 'देवगुप्त' ने मिलकर कन्नौज पर आक्रमण कर दिया। तथा राज्य श्री को कैद में करके ग्रहवम्र की हत्या कर दी। राज्यवर्द्धन तुरन्त अपनी सेना लेकर अपनी बहन राज्य श्री को आजाद कराने के लिये निकल पड़ा। उसने देवगुप्त की सेना को पराजित करके देवगुप्त की हत्या कर दिया। परन्तु धोखे से बंगाल शासक शंशाक ने राज्यवर्द्धन की हत्या कर दी।

हर्षवर्धन (भारत का अंतिम हिन्दु सम्राट)

- राजा बनते ही उसने शंशाक से बदला लेने की प्रतिज्ञा की तथा अपनी बहन राज्यश्री की सुरक्षा के लिये कन्नौज की ओर बढ़ा।
- हर्षवर्धन की सेना बड़ी तथा शक्तिशाली थी । मार्ग में ही उसे कई राजा मिले और मित्रता का प्रस्ताव रखा। अतः हर्ष ने स्वीकार किया। अंततः शशांक की हत्या कर दी।
- आगे बढ़ने पर उसे सूचना मिली कि राज्यश्री कैद से मुक्त होकर विन्ध्याचल चली गई। राज्यश्री को हर्ष ने आचार्य दिवाकर मित्र की सहायता से दूढ़ लिया।
- अपनी बहन को समझा–बुझाकर घर ले गया। इधर मौसरि शासक ग्रहवर्मा की हत्या हो जाने की वजह से कन्नौज की गद्दी खाली थी।
- अतः सभी की सहमति से कन्नौज को भी राज्य में मिला लिया गया। इस प्रकार से हर्षवर्धन ने अपनी थानेश्वर से स्थानांरित कर कन्नौज को बनाया।

साहित्य

हर्षचरित्र → बाणभट्ट (दरबारी कवि द्वारा रचित)
↓
हर्षवर्द्धन का जीवन चरित्र

कादम्बरी → बाणभट्ट संस्कृत साहित्य का श्रेष्ठ उपन्यास ।

हर्ष सामाजिक व धार्मिक स्थिति का ज्ञान।

हर्ष द्वारा लिखे गये ग्रंथ – प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानन्दा।

- इसके दरबार में मयूर नामक विद्वान था जिसने कुष्ठ रोग ठीक करने के लिये सूर्य की उपासना की। मयूरशतक/सूर्यसतक
- हर्ष के दरबार में हरिदत्त और जयसेन जैसे प्रसिद्ध विद्वान थे।

ह्वेनसांग

- कार्यकाल : 629 से 645 तक
- 7वीं शताब्दी में भारत आया तथा लगभग 16 वर्षों तक रहा। उसने अपने यात्रा संस्मरण को 'सी–यू–की' नाम से संकलित किया।
- उपाधि :
- शाक्यमुनि, यात्रियों का राजकुमार ।
  1. हर्ष को' 'वैश्य जाति का बताया है। हर्ष को शिलादित्य की उपाधि भी दी।
  2. उसने शुद्रों को कृषक कहा है।
  3. उसके समय में नालन्दा के प्राचार्य शीलभद्र थे।
  4. सिंचाई घटी यंत्र (रहट) द्वारा होती थी।
  5. भारत के घोड़े अरब, ईरान व कम्बोज से आते थे।
  6. ह्वेनसांग ने कन्नौज की धर्मसभा एवं प्रयाग की महामोक्ष परिषद का वर्णन किया।
- हर्षवर्द्धन का कोई भी पुत्र नहीं था, सिर्फ उसकी पुत्री थी। जिसका विवाह उसने बल्लभी के ध्रुवसेन द्वितीय के साथ किया।
- प्रयाग की महामोक्ष परिषद : हर्ष प्रत्येक पांचवे वर्ष दान करने के लिये एक बड़ी सभा बुलाता।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

चोल साम्राज्य

चोल पल्लवों के सामंत थे

जानकारी – अभिलेखों द्वारा उत्तरमेरूर

विस्तार – कोरोमण्डल तट, दक्कन के कुछ भाग – उरैयूर, कावेरी पद्धनम, तंजावूर क्षेत्र बन्दरगाह, पेन्नार एवं कावेरी नदियों के मध्यक्षेत्र शासक

विजयालय – चोल साम्राज्य का संस्थापक पल्लवों के सामांत था।

तंजोर पर अधिकार किया।, नरकेशरी की उपाधि।

परातंक प्रथम : चोल नरेश विजयालय का उत्तराधिकारी

दो प्रमुख युद्ध लड़े।

बैल्लुर युद्ध विजय – पाडंय नरेश राजा सिंह द्वितीय, सिंहल राजा की संयुक्त सेना

उपाधि – मदुरे कोण्ड

तक्कोलम युद्ध में पराजित – राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण तृतीय द्वारा।

संक्षिप्त टिप्पड़ी

राजराजा प्रथम : 985–1014

चोल शासक परातंक प्रथम उत्तराधिकारी

उपलब्धियां : 1. साम्राज्य विस्तार 2. सांस्कृतिक कार्य

साम्रज्य विस्तार :

1. सर्वप्रथम श्रीलंका (सिंहल) विजय करने वाला भारतीय शासक सिंहल (श्रीलंका) नरेश महेन्द्र पंचम को पराजित किया। मालद्वीव विजय : शक्तिशाली नौ सैना की स्थापना द्वारा।

सांस्कृति उपलब्धियां

1. सिंहल विजय पश्चात वहां– मुम्डि चोलमण्डलम् की स्थापना
   उपाधि धारण – मुम्माडिचोल देव
2. शैव मतानुयायी – तंजौर में बृहदेश्वर मंदिर निर्माण
   अन्य नाम – राजराजेश्वर या राजराज मंदिर

राजेन्द्र चोल पर संक्षिप्त टिप्पड़ी लिखो।

राजेन्द्र चोल – चोल वंश का शासक

राजराजा प्रथम उत्तराधिकारी

साम्राज्य विस्तार

बंगाल अभियान 1022 ई.–पाल शासक महिपाल पराजित

दक्षिण–पूर्व एशिया सैन्य अभियान–द्वीप विजित, मलय प्रायद्वीप, जावा, सुमात्रा, इण्डोनेशिया।

सांस्कृति कार्य

- बंगाल में गंगेकोंड चोलपुरम नामक राजधानी निर्माण
  उपाधि–गंगैकोंडचोल

- राजेन्द्र प्रथम स्वंय विद्वान था।
- वैदिक शिक्षा हेतु शिक्षा संस्थानों की स्थापना ।
- शिक्षा के लिये भूमि अनुदानों की शुरूआत।
- उपाधि – पंडित चोल

राजाधिराज प्रथम

यह चोल नरेश था।
राजेन्द्र प्रथम का प्रथम उत्तराधिकारी
युद्ध विजय : कोप्पम युद्ध चालुक्य नरेश 'सोमेश्वर' को पराजित किया।
सामेश्वर प्रथम द्वारा तुंगभ्रदा नदी में कूदकर आत्महत्या।

कुलोतुंग प्रथम – चोल चालुक्य रक्त मिश्रित द्वितीय चोल वंश संस्थापक (चोल चालुक्य वंश)
द्वितीय चोल वंश संस्थापक (चोल–चालुक्य वंश)
पिता : चालुक्य वंश शासक
माता : चोल राजकुमारी थी।
चीनी ऐतिहासिक स्त्रोतों के अनुसार 1077 ई में कुलोतुंग प्रथम ने चीनी सम्राट के समक्ष 72 व्यक्तियों का दूत मण्डल भेजा।
व्यापारिक शिष्ट मण्डल–तमिल व्यापार हेतु चीन से व्यापारिक सुविधाऐं प्राप्त करनी थी।

कुलोतुंग द्वितीय

चोल–चालुक्य वंश शासक
कुलोतुंग प्रथम उत्तराधिकारी
चिदम्बरम स्थित 'नटराज' मंदिर का पुरूउद्धार कराया।
मंदिर के प्रागंण से गोंविदराज की प्रतिमा को हटाकर समुद्र में फिकवा दी।

राजेन्द्र तृतीय : चोल वंश का अंतिम शासक

वाकाट्य वंश

पुराणों के अनुसार विंध्यशक्ति – वाकाट्य वंश का संस्थापक था।
राजधानी – विदर्भ/ बरार

1. **विंध्य शक्ति** – संस्थापक
2. प्रवरसेन प्रथम – महाराजा, सम्राट की उपाधि धारण
   2 अश्वमेघ यज्ञ एवं 1 वाजपेय यज्ञ किया।
3. **रूद्रसेन प्रथम**
   गुप्त शासक समुद्र गुप्त समकालीन था।
4. **रूद्रसेन द्वितीय**
   गुप्त शासक चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की पुत्री प्रमावती गुप्त से विवाह हुआ।
   पत्नी के प्रभाव में आकर बौद्ध धर्म त्याग कर वैष्णव धर्म ग्रहण।

5. **प्रवरसेन द्वितीय**
मूल नाम – दादोदर सैन
प्रमावती गुप्त का पुत्र
साहित्य एवं कला में विशेष रूचि
'सेतुबन्ध नामक काव्य की रचना की।

6. **प्रथ्वीसेन द्वितीय** : वाकाटय वंश का अंतिम शासक

दक्षिण के राज वंश

1. पल्लव वंश

साम्राज्य क्षेत्र – उत्तरी तमिलनाडु
राजधानी – कांची
महत्वपूर्ण शासक

1. सिंह विष्णु – संस्थापक
उपाधि – अवनि सिंह
वैष्णव धर्म मतानुयायी
सिंह विष्णु के राजदरवार में संस्कृत के महाकवि भारवि निवास करते।

2. महेन्द्र वर्मन :
उपाधि –' मत्त विलास
इसी के द्वारा मत विलास प्रहसन नामक हास्य ग्रंथ लिखा गया।

3. नरसिंह वर्मन प्रथम :
उपाधि – मामल्ल
चालुक्य शासक पुलेकेशिन द्वितीय को पराजित किया।
इस धर्म को समर्पित महाबलि पुरम के रथ मंदिरों का निर्माण करवाया।

4. नरसिंह वर्मन द्वितीय :
उपाधि – राज सिंह, शंकर भक्त
शैव धर्म को समर्पित कांची के कैलाश मंदिर का निर्माण किया।

<u>बादामी/वातापी के चालुक्य</u>

1. पुलकेशिन प्रथम
संस्थापक –पुलेकिशन प्रथम
उपाधि – श्री प्रथ्वी वल्लभ

2. मंगलेश

बादामी में गुहा मंदिर का निर्माण पूरा करवाया।
कदम्ब शासकों का उन्मूलन किया।
उपाधि – सत्याश्रय श्री प्रथ्वी बल्लभ महाराज

3. पुलकेशिन द्वितीय

नर्मदा नदी के तट पर हुये युद्ध में कन्नौज शासक हर्षवर्धन को पराजित किया।
पुलकेशिन द्वितीय के विजय अभियानों का उल्लेख दरबारी कवि 'रविकीर्ति' के ''एहोल प्रशस्ति लेख'' में वर्णित है।

4. विजयालित्य

इसका शासन काल सबसे लंबा था।
इसके काल में पट्ठकल में शैव मंदिर का निर्माण करवाया।

5. कीर्तिवर्मन द्वितीय

चालुक – पल्लव संघर्ष के कारण इसके सामंत दंतिदुर्ग ने चालुक्य के उत्तरी भाग में अधिकार कर लिया।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

शुंगवंश जानकारी के स्त्रोत

185 ई.पू. में अंतिम मौर्य सम्राट 'ब्रहद्रथ' की हत्या पश्चात्

स्थापना : पुष्यमित्र शुंग (मौर्य सेनापति)

अन्य शासक : अग्निमित्र, बसुमित्र, भागभद्र

अंतिम शासक : देवभूति प्रथम

जानकारी स्त्रोत

1. साहित्यक
2. पुरातात्विक

साहित्यक स्त्रोत

1. बाणभट्ट रचित 'हरिषचित'–अंतिम मौर्य सम्राट 'ब्रहदत्त' हत्या का वर्णन।
2. पंतजलि रचित 'महाभाष्य'–शुगकाल में यवन आक्रमण वर्णन।
3. गार्गी संहिता 'ज्योतिष ग्रंथ' –यवण्न आक्रमण जानकारी।

पुरातात्विक स्त्रोत : सांची स्पूत–पाषाण वेदिक

1. अयोद्धया अभिलेख

पुष्यमित्र शुंग

राज्यपाल – धनदेव

निर्मित – वर्णन

पुष्मित्र शुंग द्वारा

2 अश्वमेघ यज्ञ द्वारा जानकरी

2.बेसनगर

गरूढ़ स्तंभ

यवन राजदूत

हेलियाडोरस द्वारा निर्मित

शुंग शासक भागभद्र काल जानकारी

पुष्यमित्र शुंग पर सक्षिप्त टिप्पणी

पुष्यमित्र शुंग : शुंग वंश संस्थापक 185 ई.पू. मौर्य सेनापति सम्राट

राजधानी – विदिशा

पूर्वज – उज्जैन

उपलब्धियां

1. 2 अश्वमेघ यज्ञ–जानकारी–राज्यपाल धनदेव का अयोध्या अभिलेख
   पुरोहित – पंतजलि
2. मगध पर अधिकार–यवनों के आक्रमण से मगध को सुरक्षित हेतु।
3. विदर्भ (बरार विजय) : शासक–यज्ञसेन
   पुत्र अग्निमित्र द्वारा नेतृत्व।
4. यवन आक्रमण से सुरक्षा
5. स्थापत्य कला निर्माण

बौद्ध : सांची स्तूप की चहारदीवारी (पाषाण–वेदिका)

6. हिन्दु धर्म के संरक्षक :→

इसीकाल में
मनु द्वारा मनुस्मृति रचना
हिन्द समाज विधि ग्रंथम

मनुस्मृति द्वारा
पंतजलि द्वारा महाभाष्य रचना
व्याकरण ग्रंथ

2. **अग्निमित्र** – पुष्यमित्र शुंग उत्तराधिकारी
कालिदास ग्रंथ 'मालविकाग्निमित्रम' में वर्णन

3. **भागभद्र** – इसके शासन काल में यूनानी राजदूत हेलियोडोरस ने विदिशा की यात्रा की।

4. **देवभूति** – अंतिम शासक

कण्व वंश

संस्थापकः वासुदेव–शुंगनरेश 'देवभूति' की हत्या करने के पश्चात्।
कालक्रमः 75 ई.पू.–30 ई.पू.
अन्य शासक : नारायण, सुशर्मन
जानकारी : बाणभट्ट–हर्षचरित्र ग्रंथ

चेदी वंश/महामेधवाहन वंश

संस्थापक–महामेधवाहन
प्रमुख शासक–खारवेल
जानकारी–हाथीगुम्फा अभिलेख
राजधानी–कलिंग

खारवेल :
नहरों का निर्माण करवाया

जानकारी : हाथीगुम्फा अभिलेख

युद्ध
पुष्यमित्र शुंग को पराजित कर जैन तीर्थकर ऋषभदेव की मूर्ति मगध से लाने में सफल
सातवाहन शासक–सातकर्णी प्रथम से पराजित

प्रश्न–सातवाहन वंश शासक वर्णन
कार्यकालः 80 ई.पू.–250 ई.
राजधानीः प्रतिष्ठान/पैठन
क्षेत्रः महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश

प्रमुख शासक
1. सिमुक : संस्थापक
अंतिम कण्व शासक सुशर्मन की हत्या
प्रारंभिक राजधानीः श्रीकुल्लम

सातकर्णी प्रथम

सातवाहन वंश का वास्तविक सस्थापक

जानकारी: प्रत्नी–नागारिका–नानाघाट अभिलेख (पुणें)–भूमिदान का प्रथम साक्ष्य (बौद्धों को दान)

कलिंग नरेश खारवेल को पराजित किया। (जानकारी–हाथीगुम्फा अभिलेख)

युनानी ग्रंथ–पेरिप्लस ऑफ दी एरीथ्रीयन सी में उल्लेख

उपाधिः दक्षिणापथ स्वामी, अप्रतिहत चक्र चालक।

यज्ञ अनुष्ठान

2 अश्वमेघ

1 राजसूय

साम्राज्य विस्तार : जानकारी–नानाघाट अभिलेख (पुणें)

पशिमी मालवा

अनुप्रदेश (नर्मदा घाटी)

विदर्भ (बरार)

सिक्का प्रचलन

एक प्रष्ठ–घोड़ा अंकित 'अश्वमेघ यज्ञ साक्ष्य)

दूसरे प्रष्ठ अंकन–अप्रतिहत चक्र चालक

मालवा शैली को गोल मुद्रा से एवं अपनी पत्नी के नाम पर रजत मुद्राऐं प्रचलन।

प्रश्न–गौतमी पुत्र सातकर्णी का संक्षिप्त वर्णन : 100 शब्दों में।

गौतमी पुत्र शातकर्णी–सातवाहन वंश शासक

माता–गौतमी बलश्री

उपाधि–अद्विितीय बाह्मण

उपलब्धियां: शक शासक नाहपान को पराजित–जोगलथबी (नासिक) से

साक्ष्य: चांदी के सिक्के प्राप्त

एक तरफ–गोतमीपुत्र शतकर्णी नाम अंकन

दूसरी तरफ–नाहपान

अतः नाहपान द्वारा अधीनता स्वीकार्य

साम्राज्य विस्तारः उत्तर में मालवा, बंगाल खाड़ी, अरब सागर, दक्षिण कर्नाटक।

इसके घोड़ो ने तीन समुद्रों का पानी पिया, जिसका वर्णन नासिक अभिलेख में।

भूमिदान : बौद्ध संघ–अजकालिकय ग्रामदान

वेणकटक नगर की स्थापना।

वेणकटक स्वामी उपाधि।

'पेरीप्लस ऑफ दी एरीथ्रीन शी में उल्लेख।

हाल

सातवाहन वंश शासक

श्रीलंका विजय (सेनापति–विजयानंद)

श्रीलंका राजकुमारी लीलावती से विवाह

ग्रंथ–प्राकृत भाषा गाथा सप्त सती।

दरबारी कवि–गुणाठय–ब्रहत कथा ग्रंथ
राजकुमारी लीलावती हेतु संस्कृत सीखने के लिये दरबारी कवि सर्ववमन–कातंत्र ग्रंथ ।

वशिष्टीपुत्र पुलमावी :
सातवाहन वंश शासक
आंधप्रदेश विजय
उपाधि–आंध्रराज, आंध्रभोज
राजधानी–प्रतिष्ठान / पैठन
अमरावती स्तूप का निर्माण
पुराणों में (पुलोमा नाम)
सिक्कों पर नाव अंकित
शक शासक रूद्रादामन से 2 बार पराजित

यज्ञश्री सातकर्णी–शकों के विजित क्षेत्र पर पुनः अधिकार
सिक्के पर जहाज का अंकन

पुलमावी तृतीय–अंतिम शासक

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services